परियों की कहानियां



कहानियों की प्रसिद्ध पुस्तक 'ग्रिम्स फेयरी टेल्स' का सरल रूपान्तर

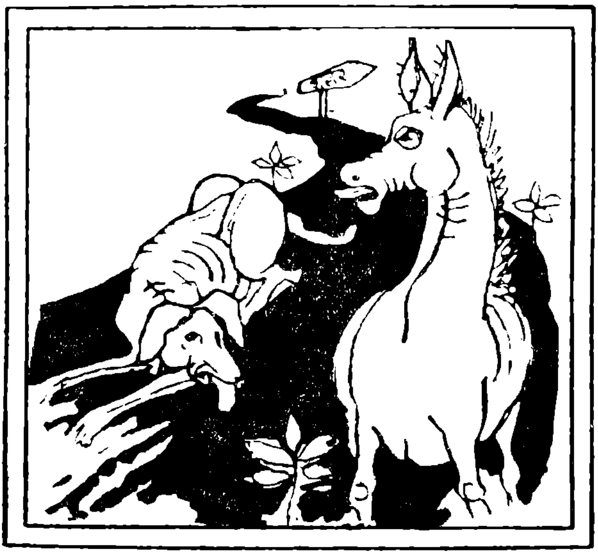
जर्मन कहानियों की प्रसिद्ध पुस्तक
'GRIMM'S FAIRY TALES'
का सरल हिन्दी रूपान्तर

मूल्य : पांच रुपये (5.00)

PARIYON KI KAHANIYAN by Grimm Brothers (Jacobe Grimm and Wilhelm Grimm)

परियों की कहानियां

रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास



शिक्षा भारती, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

सोने की चिड़िया



बहुत पुराने ज़माने की बात है कि एक राजा था। उसके महल में एक बहुत सुन्दर बाग था। बाग में तरह-तरह के फूलों के पौधे और अनेक प्रकार के मीठे फलों के पेड़ थे। लेकिन इस बाग में सबसे आश्चर्यजनक चीज़ एक सेब का पेड़ था, जिसमें सोने के सेब लगते थे।

राजा ने इस पेड़ की देख-भाल का खास इंतज़ाम कर रखा था। जब इसके फल पकते थे तो चौकीदार रात-दिन पेड़ का पहरा दिया करते थे, ताकि कोई सोने का सेब चुराकर न ले जाए।

लेकिन एक दिन की बात है कि बाग के माली ने जब सोने के सेबों को गिना तो उसमें से एक सेब गायब था। उसने दौड़कर राजा को खबर दी। राजा फौरन बाग में पहुंचा। उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि देख-भाल का इतना पक्का इंतज़ाम होने पर भी एक सेब किसी ने चुरा लिया। उसने एलान किया कि जो कोई सोने के सेब को चुराने वाले चोर का पता देगा, उसे इनाम दिया जाएगा।

सबसे बड़े राजकुमार ने राजा से कहा कि रात में वह पहरा देगा और चोर को पकड़ने की कोशिश करेगा। राजा ने उसको इसकी इजाज़त दे दी। बड़ा राजकुमार रात में पहरा देने लगा, लेकिन दो घंटे बाद ही उसे नींद आ गई और वह सो गया।

सुबह उठकर जब उसने सेबों को गिना तो वह देखकर चकित रह गया कि रात-भर में एक और सेब गायब हो गया था। इसके बाद दूसरी रात को मंझले राजकुमार ने पहरा देने का काम संभाला, लेकिन उसे भी नींद आ गई और तीसरा सेब चोरी हो गया।

राजा बहुत चिन्तित था। दरबारियों की भी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए! सब लोग उदास बैठे थे कि इतने में सबसे छोटा राजकुमार आया और उसने कहा कि आज की रात मैं पहरा दूंगा और चोर को पकड़ूंगा। राजा इस राजकुमार से खुश नहीं रहता था। वह उसे मूर्ख भी मानता था। उसने उसे डांटते हुए कहा, "तुम क्या समझते हो, क्या तुम्हें इसमें सफलता मिलेगी? तुमसे बड़े और तुमसे ज़्यादा समझदार दोनों राजकुमार इस काम में असफल हो चुके हैं। तुम जाओ अपना काम करो।"

लेकिन छोटा राजकुमार नहीं माना। उसने राजा से प्रार्थना की कि उसे एक मौका ज़रूर दिया जाए। अन्त में राजा राज़ी हो गया।

राजकुमार रात में पहरा देने लगा। उसने तय किया कि वह किसी भी हालत में नहीं सोएगा और चोर को ज़रूर पकड़ेगा। जब आधी रात हुई और बारह बजे का आखिरी घंटा बजा तो राजकुमार ने देखा कि एक सुन्दर सोने की चिड़िया कहीं से उड़ती हुई आई और सेब के पेड़ पर बैठ गई। उसने देखते-देखते सोने का एक सेब तोड़कर अपनी चोंच में पकड़ लिया।

राजकुमार ने फौरन निशाना साधकर तीर चला दिया। लेकिन तीर चिड़िया को नहीं लगा और वह पंख फड़फड़ाकर उड़ गई। हां, इतना अवश्य हुआ कि उसका एक सुनहरा पंख टूटकर ज़मीन पर आ गिरा। दूसरे दिन सुबह राजकुमार ने राजा को सारी बात बता दी और वह सोने का पंख उसके सामने रख दिया। पंख इतना सुन्दर और इतना कीमती था कि राजा उसे

देखता ही रह गया। उसने कहा, "अगर उस चिड़िया का एक पंख इतना सुन्दर है तो वह पूरी चिड़िया कितनी सुन्दर होगी! मैं चाहता हूं कि उस चिड़िया को कोई पकड़ लाए।"

सबसे पहले बड़ा राजकुमार इस काम के लिए रवाना हुआ। चलते-चलते वह एक जंगल में पहुंचा। वहां उसने एक लोमड़ी को एक पेड़ के नीचे आराम करते हुए देखा। राजकुमार ने मौका देखकर एक तीर अपने धनुष पर चढ़ा लिया। वह तीर छोड़ने ही जा रहा था कि लोमड़ी ने चिल्लाकर कहा, "राजकुमार, मुझे मत मारो। मुझे पता है कि तुम सोने की चिड़िया की खोज में निकले हो। तुम मेरी राय मानो तो तुम्हारा काम जल्दी ही पूरा हो जाएगा। तुम इसी रास्ते से सीधे चले जाओ। शाम होने पर तुम एक गांव में पहुंचोगे। वहां तुम्हें आमने-सामने दो सरायें मिलेंगी। एक सराय खूब सजी-सजाई और सुन्दर-सी होगी लेकिन तुम उसमें मत ठहरना। तुम उसके सामने वाली दूसरी सराय में ठहरना, जो बहुत मामूली और देखने में भद्दी-सी होगी। ऐसा करने पर तुम्हारा काम आसानी से पूरा हो जाएगा।"

लोमड़ी की बात सुनकर राजकुमार को हंसी आ गई। उसने डांटकर कहा, "भाग जा यहां से! मुझे तुम्हारी सलाह की ज़रूरत नहीं है।" यह कहकर उसने तीर छोड़ दिया। लेकिन लोमड़ी बहुत चालाक थी। वह बचकर निकल भागी।

राजकुमार आगे चलता गया। शाम को जब वह एक गांव में पहुंचा तो उसने देखा कि वहां सड़क के किनारे सचमुच दो सरायें थीं। उनमें से एक सराय खूब सजी-सजाई थी और उसके अन्दर से लोगों के नाचने-गाने की आवाज़ें आ रही थीं। दूसरी सराय भद्दी-सी थी और वहां अंधेरा घिरा हुआ था। राजकुमार सजी-सजाई सराय में ठहर गया और वहां नाच-रंग में मस्त हो गया। थोड़ी देर में वह भूल गया कि वह असल में सोने की चिड़िया की खोज में निकला था।

उधर जब काफी समय बीत गया और बड़ा राजकुमार नहीं

लौटा तो मंझला राजकुमार सोने की चिड़िया की खोज में चल पड़ा। वह भी उसी तरह चलते-चलते जंगल में पहुंचा तो वही लोमड़ी उसे भी मिली। इस राजकुमार ने भी लोमड़ी की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह जब शाम को उस गांव में पहुंचा तो बड़े राजकुमार की तरह सजी-सजाई सराय में ठहरा। वहां के नाच-रंग में मस्त होकर वह भी अपना काम भूल गया। यहां तक कि उसे घर लौटने की भी सुध नहीं रही।

अन्त में सबसे छोटे राजकुमार ने राजा से कहा कि मैं सोने की चिड़िया की खोज में जाऊंगा। राजा को विश्वास था कि जब उससे बड़े दोनों राजकुमार इस काम में सफल नहीं हुए तो इसे और भी सफलता नहीं मिलेगी। लेकिन उसके ज़िद करने पर राजा ने उसे इजाज़त दे दी।

छोटा राजकुमार तैयार होकर सोने की चिड़िया की खोज में निकला। जंगल में उसे भी लोमड़ी मिली। राजकुमार ने लोमड़ी की बात को ध्यान से सुना और लोमड़ी से कहा, "ठीक है, तुम जैसे कह रही हो, मैं वैसे ही करूंगा। अब तुम जाओ। मैं तुम्हें नहीं मारूंगा।"

इस पर लोमड़ी खुश होकर बोली, "तुम सबसे अच्छे लड़के मालूम होते हो। तुमने मेरी बात का मज़ाक नहीं उड़ाया और मुझपर तीर नहीं चलाया। मैं तुमसे खुश हूं और तुम्हारी मदद करूंगी। आओ, तुम मेरी पूंछ पर बैठ जाओ। मैं तुम्हें उस सराय तक पहुंचा देती हूं।"

देखते-देखते लोमड़ी की पूंछ काफी बड़ी हो गई और राजकुमार उसपर बैठ गया। उसके बैठते ही लोमड़ी हवा में उड़ने लगी और थोड़ी ही देर में मैदानों और पहाड़ों को पार करके उसी गांव में जा पहुंची। राजकुमार ने उसकी सलाह को मानकर छोटी और पुरानी सराय में ही डेरा डाल दिया। वह दूसरी सजी-सजाई सराय से दूर ही रहा।

दूसरे दिन सुबह उठकर जब वह आगे बढ़ा तो कुछ दूर

चलने पर ही उसे वह लोमड़ी फिर से रास्ते में मिल गई। लोमड़ी ने उससे कहा, "अब मैं तुम्हें बताती हूं कि आगे तुम्हें क्या करना चाहिए। तुम सीधे चले चलो। आगे चलने पर तुम्हें एक बहुत बड़ा किला मिलेगा, जिसपर सिपाही लोग पहरा दे रहे होंगे। तुम सिपाहियों से डरना मत और सीधे अन्दर चले जाना, क्योंकि वे इस समय सो रहे होंगे। तुम बेधड़क होकर किले में घुसते चले जाना और उनके कमरों को पार करते हुए उस जगह पहुंच जाना, जहां लकड़ी के एक मामूली-से पिंजरे में सोने की चिड़िया बन्द है। तुम चिड़िया को पिंजरे सहित उठाकर किले से बाहर ले आना। लेकिन एक बात याद रखना—चिड़िया के पिंजरे के पास ही एक बहुत सुन्दर-सा सोने का पिंजरा भी रखा होगा। तुम भूलकर भी चिड़िया को उस पिंजरे में मत रखना। अगर तुम उसे लकड़ी के पिंजरे में से निकालकर सोने के पिंजरे में रखने की कोशिश करोगे तो बाद में पछताओगे।" यह कहकर लोमड़ी ने राजकुमार को फिर से अपनी पूंछ पर बिठाया और थोड़ी ही देर में उसको उस किले के पास पहुंचा दिया।

राजकुमार ने किले के पास जाकर देखा कि सचमुच उसके पहरेदार सो रहे थे। वह बिना डरे सीधा महल में घुस गया और थोड़ी ही देर बाद उस कमरे में जा पहुंचा, जहां सोने की चिड़िया लकड़ी के एक पिंजरे में बैठी हुई थी। पिंजरे के पास ही सोने के तीन सेब पड़े हुए थे। इन सेबों को देखकर राजकुमार ने फौरन पहचान लिया कि ये सेब उसके पिता के बाग के ही थे। सोने की चिड़िया इतनी सुन्दर थी कि राजकुमार उसको देखता ही रह गया। वह उसको उठाकर लाने ही वाला था कि उसकी नजर पास ही पड़े सोने के एक सुन्दर-से पिंजरे पर पड़ी। वह पिंजरा बहुत सुन्दर था और उसमें तरह-तरह के कीमती पत्थर जड़े हुए थे। सोने की चिड़िया के लिए वही पिंजरा ठीक मालूम पड़ता था।

राजकुमार लोमड़ी की बात को भूल गया और उसने सोने की चिड़िया को लकड़ी के पिंजरे से निकालकर सोने के पिंजरे में

बन्द कर दिया। लेकिन नये पिंजरे में आते ही चिड़िया ने खूब ज़ोर-ज़ोर से शोर मचाना शुरू कर दिया। राजकुमार पिंजरे को उठाकर कमरे से बाहर भी नहीं निकल पाया था कि बहुत-से सिपाही कमरे में घुस आए और उन्होंने राजकुमार को पकड़ लिया। अब राजकुमार को अपनी भूल का पता चला। उसे याद आया कि लोमड़ी ने उससे क्या कहा था। लेकिन अब क्या हो सकता था! सिपाही उसे खींचते हुए राजा के दरबार में ले गए। राजा के पूछने पर राजकुमार ने सारी बात कह सुनाई।

राजा बोला, "तुम मेरे महल में चोरी करने के लिए घुसे थे। मैं तुमको माफ नहीं कर सकता। तुम्हें फांसी की सज़ा दी जाएगी। लेकिन मैं तुम्हें एक मौका देता हूं। अगर तुम मेरे लिए सोने का घोड़ा ला दो तो मैं न सिर्फ तुम्हें छोड़ दूंगा बल्कि सोने की चिड़िया भी तुमको दे दूंगा।"

राजकुमार को अपनी जान बचाने के लिए राजा की शर्त माननी पड़ी। अब वह सोने के घोड़े की तलाश में निकला। किले के बाहर आने पर उसने देखा कि वह लोमड़ी उसका इन्तज़ार कर रही है। उसने लोमड़ी को सारी बातें बताईं।

लोमड़ी ने निराश होते हुए कहा, "मैं अब तुम्हारी कोई मदद नहीं करूंगी। तुमने मेरे कहने के अनुसार नहीं किया। मैंने जिस तरह से कहा था, अगर तुम उस तरह से काम करते तो इस मुसीबत में नहीं फंसते और सोने की चिड़िया तुम्हें मिल जाती।"

राजकुमार बोला, "इस बार मुझे माफ कर दो! मुझसे गलती हो गई। मेरा काम तुम्हारी सहायता के बिना नहीं चलेगा। मुझे राजा ने सोने का घोड़ा लाने के लिए कहा है, वरना वह मुझे फांसी पर चढ़ा देगा।"

लोमड़ी ने कहा, "खैर, मैं तुम्हें माफ करती हूं। अब तुम ऐसा करो कि मेरी पूंछ पर बैठकर सीधे चले चलो। कुछ दूर जाने पर तुम्हें एक दूसरा किला मिलेगा। उसी किले की घुड़साल में तुम्हें सोने का घोड़ा बंधा हुआ मिलेगा। महल के नौकर-चाकर

सब सो रहे होंगे। तुम चुपचाप जाना और घोड़े को खोल लेना। लेकिन एक बात याद रखना—वहां घोड़े के पास ही घोड़े पर कसने के लिए दो जीनें रखी होंगी। उसमें से एक तो पुरानी चमड़े की जीन होगी और दूसरी सोने की जीन होगी। तुम सोने की जीन को छूना भी मत और उस घोड़े पर पुरानी चमड़े की जीन को कसकर सवार हो जाना और उसे दौड़ाते हुए किले से बाहर चले आना।"

राजकुमार ने वादा किया कि वह ठीक-ठीक वैसा ही करेगा। लोमड़ी ने उसको अपनी पूंछ पर बैठाया और कुछ ही देर में वह उसे ले किले के पास जा पहुंची। किले के पास पहुंचते ही लोमड़ी ने उसे नीचे उतारा और फिर वहां से चली गई।

राजकुमार सीधा फाटक से किले में घुस गया। अन्दर जाकर उसने देखा कि वहां के सभी नौकर-चाकर सोए हुए थे। थोड़ी ही देर में वह किले की घुड़साल में जा पहुंचा। वहां एक बहुत सुन्दर सुनहरा घोड़ा बंधा हुआ था। राजकुमार ने पास जाकर देखा कि वह घोड़ा सचमुच सोने का था। ऐसा सुन्दर घोड़ा उसने सपने में भी नहीं देखा था। उसने आगे बढ़कर घोड़े को खोल लिया। जब वह बाहर निकलने लगा तो उसकी नज़र एक कोने में पड़ी हुई सोने की जीन पर गई। यह जीन बहुत सुन्दर थी और इसमें हीरे-मोती जड़े हुए थे। उसके पास ही एक फटी-पुरानी चमड़े की जीन पड़ी हुई थी। इतने सुन्दर घोड़े पर पुराने चमड़े की जीन कसना राजकुमार को अच्छा नहीं लगा। उसने सोने की जीन उठा ली और घोड़े पर कसना शुरू किया। इतने में घोड़ा ज़ोरों से हिनहिना उठा। किले के नौकर-चाकर जाग गए। थोड़ी ही देर में राजकुमार पकड़ लिया गया।

राजकुमार को सिपाहियों ने हाथ बांधकर अपने राजा के सामने पेश किया। राजा ने सारी बातें सुनकर कहा, "तुमने मेरे घोड़े को चुराने की कोशिश की है, इसलिए तुम्हें फांसी की सज़ा दी जाएगी। लेकिन अगर तुम मेरा एक काम कर दो तो मैं तुम्हें

छोड़ सकता हूं। यहां से कुछ ही दूर सोने का एक महल है और उसमें बहुत सुन्दर राजकुमारी रहती है। अगर तुम अपनी जान बचाना चाहते हो तो उस राजकुमारी को मेरे पास ले आओ। तुम्हें इनाम में यह सोने का घोड़ा दे दूंगा।"

बेचारा राजकुमार! वह फिर से एक नई मुसीबत में फंस गया। उसे मजबूर होकर राजा की शर्त माननी पड़ी। अब वह सोने के महल की खोज में निकला। कुछ दूर चलने पर फिर उसे वही लोमड़ी मिली।

पता नहीं कैसे लोमड़ी को सारी बातें मालूम हो गई थीं। वह बोली, "देखो, तुमने इस बार भी मेरी बात नहीं मानी। मेरी बातें मान जाते तो यह नई मुसीबत तुम्हारे गले नहीं पड़ती। ख़ैर, मुझे तुमपर दया आ रही है। मैं तुम्हारी मदद करूंगी। चलो, मैं तुमको सोने के महल के पास पहुंचाए देती हूं। तुम महल के बाहर ही कहीं पीछे छिपे रहना। जब उसमें से शाम को राजकुमारी तालाब में नहाने के लिए बाहर आए तो तुम आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लेना। जैसे ही तुम उसको छुओगे, राजकुमारी तुम्हारे साथ आने के लिए राज़ी हो जाएगी। लेकिन एक बात याद रखना—तुम उसको वहां से अपने साथ ले आना। उसे वापस महल में मत जाने देना। वह तुमसे कहेगी कि मैं अभी अपने माता-पिता से मिलकर आती हूं। लेकिन तुम उसकी बातों में मत आना, वरना फिर मुसीबत में फंस जाओगे।"

यह कहकर लोमड़ी ने फिर से अपनी पूंछ फैला दी और राजकुमार उसपर बैठ गया। देखते-देखते लोमड़ी हवा में उड़ती हुई कुछ ही देर बाद सोने के महल के पास जा पहुंची।

महल के पास पहुंचते ही राजकुमार एक पेड़ की आड़ में छिपकर बैठ गया। शाम को जब राजकुमारी नहाने के लिए किले से बाहर आई तो राजकुमार ने हिम्मत करके आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया। उसके छूते ही राजकुमारी उसके साथ चलने के लिए तैयार हो गई। वह बोली, "राजकुमार, तुम मुझे जहां

भी ले जाना चाहोगे, मैं तुम्हारे साथ चलूंगी, लेकिन मुझे थोड़ी देर के लिए अपने माता-पिता से मिल लेने दो।"

राजकुमार ने कहा, "नहीं, यह नहीं होगा। तुम्हें तुरन्त मेरे साथ चलना पड़ेगा।" लेकिन राजकुमारी रोने लगी। इतनी सुन्दर राजकुमारी को रोते देखकर राजकुमार का मन पिघल गया। अन्त में वह राज़ी हो गया और बोला, "जाओ, थोड़ी देर के लिए माता-पिता से मिल आओ, लेकिन फिर तुरन्त बाहर चली आना।"

लेकिन राजकुमारी ने जैसे ही वापस किले में पैर रखा, किले के पहरेदार जाग गए और उन्होंने राजकुमार को पकड़ लिया। राजकुमार बहुत पछताया, लेकिन अब क्या हो सकता था! सिपाहियों ने उसे अपने राजा के सामने पेश किया। राजा बहुत निराश था। उसने उसी वक्त हुक्म दिया कि इस राजकुमार को फौरन फांसी पर चढ़ा दिया जाए।

यह सुनकर राजकुमार रोने-गिड़गिड़ाने लगा। इसपर राजा ने थोड़ी देर विचार करने के बाद कहा, "मैं अपनी आज्ञा वापस नहीं ले सकता, लेकिन अगर तुम मेरा एक काम कर दो तो तुम्हारी जान बच सकती है। हमारे किले के ठीक सामने यह जो बड़ा पहाड़ है, इसके कारण हमारे किले की सुन्दरता नष्ट होती है। अगर तुम आठ दिन में इस पहाड़ को खोदकर साफ कर दो तो हम तुम्हें क्षमा कर देंगे और राजकुमारी का विवाह तुम्हारे साथ कर देंगे।"

राजकुमार किले के बाहर आकर पहाड़ को देखने लगा। उसके हाथ में एक छोटी-सी कुदाली थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इतना बड़ा पहाड़ आठ दिन में वह कैसे खोद सकेगा। फिर भी उसे अपनी जान तो बचानी ही थी। इसलिए वह पहाड़ खोदने लगा। धीरे-धीरे सात दिन बीत गए। इतने दिन तक लगातार खोदने पर भी पहाड़ का सिर्फ एक कोना ही खोद सका। वह दुखी होकर वहीं बैठ गया। उसे अब अपने पर बहुत अधिक

क्रोध आ रहा था। वह मन में कहने लगा कि अगर मैंने लोमड़ी की बात मान ली होती तो कितना अच्छा होता ! लोमड़ी ने मुझको हर बार ठीक सलाह दी और मैं हर बार उसका कहना न मानकर नई से नई मुसीबत में फंस जाता हूं।

राजकुमार इस तरह सिर झुकाए बैठा सोच रहा था कि अचानक उसे अपने पैरों के पास लोमड़ी की पूंछ दिखाई दी। उसने नज़र उठाकर देखा—सचमुच वही लोमड़ी खड़ी थी ! लोमड़ी ने मुस्कराते हुए कहा, "क्यों, क्या हाल है ? इस बार तो तुम्हारी मदद करने की मेरी ज़रा भी इच्छा नहीं थी। लेकिन मैं सात दिन से तुमको पहाड़ खोदते हुए देख रही हूं। मुझे दया आ गई और मैं तुम्हारी मदद के लिए चली आई। जाओ, तुम बहुत थक गए हो। सो जाओ। मैं थोड़ी ही देर में तुम्हारा काम पूरा कर दूंगी।"

इस बार राजकुमार ने तय कर लिया था कि अब वह लोमड़ी जिस तरह से कहेगी, वह उसी तरह करेगा। वह चुपचाप उठकर एक तरफ सोने चला गया। थोड़ी ही देर में उसे नींद आ गई। सुबह जब वह सोकर उठा तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। वहां कहीं भी पहाड़ का नाम नहीं था और महल का सुन्दर दृश्य दिखाई दे रहा था। राजकुमार सीधा राजा के पास पहुंचा। राजा उसके काम पर बहुत खुश था। उसने तुरन्त अपने वादे के अनुसार राजकुमारी के साथ उसका विवाह कर दिया।

जब राजकुमार उस सुन्दर राजकुमारी को अपने साथ लेकर कुछ दूर चला तो उसे रास्ते में फिर वही लोमड़ी मिली। लोमड़ी बोली, "बधाई हो, राजकुमार ! राजकुमारी के साथ तुम्हें देखकर मुझे बड़ी खुशी हो रही है। लेकिन अब तुम्हें सोने का घोड़ा और सोने की चिड़िया भी प्राप्त करनी चाहिए। क्योंकि वे दोनों चीज़ें तुम्हारे ही लायक हैं और तुम उन्हें आसानी से प्राप्त कर सकते हो।"

राजकुमार बोला, "लेकिन भला मुझे सोने का घोड़ा और सोने की चिड़िया कैसे मिल सकती है ? मैं तो इस राजकुमारी को भी उस राजा के लिए ले जा रहा हूं।"

लोमड़ी ने कहा, "नहीं, तुम ऐसा काम कभी मत करना। इस राजकुमारी के साथ तुम्हारा विवाह हुआ है और यह अब तुम्हारी ही है। अगर तुम मेरे कहने के अनुसार काम करो तो तुम्हें सोने का घोड़ा और सोने की चिड़िया भी मिल सकती है। तुम पहले इस राजकुमारी को लेकर सोने के घोड़े वाले राजा के पास जाओ। राजा खुश होकर तुमको सोने का घोड़ा दे देगा। तुम घोड़े पर सवार हो जाना और सवार होकर सबसे विदा लेना। राजकुमारी से तुम सबसे बाद में विदा लेना। जैसे ही तुम राजकुमारी के पास पहुंचो, तुम उसे हाथ से पकड़कर घोड़े के ऊपर खींच लेना और घोड़े को दौड़ा देना। सोने का घोड़ा इतना तेज़ दौड़ता है कि दुनिया का तेज़ से तेज़ घोड़ा भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता। जाओ, तुम पहले इतना काम पूरा करो। इसके बाद आगे का काम मैं तुम्हें बाद में बताऊंगी। मैं तुम्हें वहां रास्ते में मिलूंगी।"

राजकुमार ने ठीक वैसा ही किया, जैसा लोमड़ी ने उससे कहा था। जब सोने के घोड़े वाले राजा ने खुश होकर उसे इनाम में सोने का घोड़ा दिया तो राजकुमार उसपर सवार हो गया और उससे विदा लेने लगा। अन्त में वह राजकुमारी को उठाकर घोड़े को तेज़ी से दौड़ाता हुआ किले से बहुत दूर निकल आया।

रास्ते में एक पेड़ के नीचे लोमड़ी उसका इन्तजार कर रही थी। उसे देखकर लोमड़ी बोली, "शाबाश ! अब तुम सोने की चिड़िया भी प्राप्त कर लो। जब तुम सोने की चिड़िया वाले राजा के पास पहुंचोगे तो वह इस घोड़े को देखकर बहुत खुश होगा। तुम उससे कहना कि पहले सोने की चिड़िया का पिंजरा मेरे हाथ में दे दो, तब मैं यह घोड़ा तुमको दूंगा। जब वह पिंजरा तुम्हारे पास लाए तो तुम पिंजरा उसके हाथ से छीन लेना और

घोड़े को दौड़ा देना। बस, ऐसे चिड़िया तुमको मिल जाएगी और कोई तुम्हें पकड़ भी नहीं सकेगा।"

इस बार भी राजकुमार ने ठीक वैसा ही किया। वह राजकुमारी के साथ ही घोड़े पर बैठा रहा और जब राजा ने उसके हाथ में सोने की चिड़िया का पिंजरा दिया तो उसने देखते-देखते एड़ मार दी और सोने का घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

कुछ दूर चलने पर लोमड़ी उसे मिली। राजकुमार ने उससे कहा, "तुमने मेरी बड़ी मदद की है। तुम्हारी वजह से मुझे न सिर्फ सोने की चिड़िया मिली, बल्कि सोने का घोड़ा और इतनी सुन्दर राजकुमारी भी मिल गई। बताओ, मैं तुमको क्या इनाम दूं? मैं तुमको कुछ न कुछ ज़रूर देना चाहता हूं।"

लोमड़ी ने कहा, "अगर तुम खुश हो तो मेरा एक काम कर दो। तुम एक तीर चलाकर मुझे मार दो। इस समय तुम यही सबसे बड़ा काम मेरे लिए कर सकते हो।"

राजकुमार ने कहा, "भला यह कैसे हो सकता है! तुमने मेरी इतनी मदद की, और मैं बदले में तुम्हें मार दूं? मुझसे यह नहीं होगा।"

यह सुनकर लोमड़ी बड़ी दु:खी हुई और बोली, "अगर तुम मेरा यह काम नहीं कर सकते तो फिर ठीक है, जाओ। लेकिन मैं तुम्हारी भलाई के लिए ही कह रही हूं कि तुम दो बातें ज़रूर याद रखना—एक तो तुम किसी कुएं की दीवार पर मत बैठना और दूसरे तुम ऐसे लोगों के लिए धन मत खर्च करना, जिन्हें फांसी मिलने वाली हो।"

राजकुमार बोला, "भई, तुम भी अजीब हो! तुम्हारी बातें मेरी समझ में ही नहीं आतीं। भला मैं कभी कुएं की दीवार पर क्यों बैठूंगा और ऐसे आदमियों पर धन क्यों खर्च करूंगा, जिनको फांसी दी जाने वाली हो!"

लेकिन लोमड़ी ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया और 'अलविदा' कहकर वहां से चली गई।



राजकुमार सोने का घोड़ा दौड़ाता हुआ आगे बढ़ा। राजकुमारी उसके साथ ही बैठी हुई थी और सोने की चिड़िया का पिंजरा उसके हाथ में था। कुछ ही देर में राजकुमार उस छोटे गांव में जा पहुंचा, जिसमें वे दोनों सरायें थी। गांव के लोग और खास तौर से बच्चे उसको देखने के लिए बाहर निकल आए। सोने के घोड़े पर इतने सुंदर राजकुमार के साथ बैठी एक राजकुमारी को देखकर सभी लोग चकित थे। इतने में राजकुमार ने देखा कि गांव के बगीचे में एक जगह बहुत-से लोग जमा हैं और कुछ शोर हो रहा है। राजकुमार के पूछने पर लोगों ने बताया कि वहां दो आदमियों को फांसी देने की तैयारी हो रही है। राजकुमार उधर ही चल पड़ा।

वहां पहुंचने पर उसने पहचान लिया कि जिन आदमियों को फांसी दी जाने वाली थी वे और कोई नहीं, बल्कि उसके ही भाई थे। वे लोग तब से उसी सजी-सजाई सराय में रह रहे थे और तरह-तरह के बुरे काम करते थे। वे जुआ भी खेलते थे और जुए में बहुत-सा धन हार चुके थे। उन्होंने लोगों से बहुत-सा रुपया भी उधार लिया था। इन्हीं सब बातों से चिढ़कर अब गांववाले उन्हें फांसी पर चढ़ाने जा रहे थे।

राजकुमार भला यह कैसे होने देता! उसने लोगों से कहा कि मुझसे रुपया ले लो और इन लोगों को छोड़ दो। उसके बहुत कहने-सुनने पर लोग राजी हो गए और उन्होंने उन दोनों आदमियों को रिहा कर दिया। राजकुमार अपने भाइयों को छुड़ाकर आगे चला। कुछ दूर चलने पर जंगल में उन्हें एक कुआं दिखाई दिया। इस पर राजकुमार के भाइयों ने उससे कहा, "चलो, कुछ देर कुएं के पास आराम करते हैं। वहां ठंडा पानी पीने के बाद हम लोग आगे चलेंगे।"

राजकुमार राजी हो गया। अब तक वह यह भी भूल चुका था कि लोमड़ी ने विदा होते समय उससे क्या कहा था। वह घोड़े से उतरकर कुएं की दीवार पर बैठ गया और आराम करने

लगा। उसके दोनों भाइयों ने मौका देखकर उसे कुएं में धकेल दिया। इसके बाद उन्होंने घोड़े पर राजकुमारी को डाला और सोने की चिड़िया का पिंजरा उठाया और वहां से चलते बने।

कुछ ही देर में वे लोग अपने राज्य में लौट आए। घर लौट-कर उन्होंने राजा से कहा, "हम लोग सोने की चिड़िया को पकड़ लाए हैं। इसी चिड़िया ने हमारे बाग में से सोने के सेब चुराए थे। इसके साथ ही हम एक यह सोने का घोड़ा और राजकुमारी भी लाए हैं।" राजा बहुत खुश हुआ। सारे राज्य के लोग खुशियां मनाने लगे।

लेकिन राजकुमारी खुश नहीं थी। वह बराबर रोती रहती थी। उसने खाना-पीना छोड़ दिया। यही नहीं, घोड़े ने भी दाना-पानी बन्द कर दिया और सोने की चिड़िया भी उदास रहने लगी। राजा ने बहुत कोशिश की लेकिन न तो वह राजकुमारी खुश हुई और न सोने के घोड़े और सोने की चिड़िया ने दाना खाना शुरू किया।

उधर छोटा राजकुमार कुएं में गिर गया था लेकिन वह मरा नहीं। कुआं बहुत गहरा था लेकिन उसमें पानी बहुत थोड़ा था। वह कुएं में बैठा-बैठा अपने भाग्य को कोसता रहा। अब उसे फिर उसी लोमड़ी की याद आई और वह पछताने लगा कि अगर मैंने उसका कहना मान लिया होता तो मैं मुसीबत में न फंसता।

राजकुमार ने जैसे ही लोमड़ी को याद किया, लोमड़ी न मालूम कैसे कुएं के मुंह पर आ पहुंची और बोली, "देखो राज-कुमार, मैंने पहले ही तुम्हें समझाया था, कि किसी कुएं की दीवार पर मत बैठना और ऐसे आदमियों की मदद मत करना, जिन्हें फांसी दी जाने वाली हो। लेकिन तुम नहीं माने। खैर, चलो अब आखिरी बार मैं फिर तुम्हारी मदद किए देती हूं। लो मेरी पूंछ पकड़कर कुएं से बाहर निकल आओ।"

यह कहकर लोमड़ी ने अपनी पूंछ कुएं में लटका दी। देखते-

देखते पूंछ इतनी लम्बी हो गई कि कुएं के पेंदे में पड़े राजकुमार के पास तक जा पहुंची। राजकुमार उसे पकड़कर कुएं से बाहर निकल आया। लोमड़ी ने उससे कहा, "जाओ, अब तुम अपने घर जाओ। लेकिन ज़रा होशियार रहना। तुम्हारे भाई तुम्हारी जान के दुश्मन हैं। वे लोग ज़रूर तुमको ढूंढ़ रहे होंगे।"

राजकुमार घर की ओर चल पड़ा। अपने राज में पहुंचने पर उसे एक भिखारी मिला। भिखारी को उसने अपने सुन्दर कपड़े दान में दे दिए और उसके भद्दे पुराने कपड़े पहन लिए। इस तरह भेस बदलकर वह अपने किले में पहुंचा। वहां उसके पहुंचने पर एक बड़ी आश्चर्यजनक बात हुई। सोने का घोड़ा खुशी से हिन-हिनाने लगा और दाना खाने लगा। सोने की चिड़िया भी अपने पिंजरे में खुशी से फुदकने लगी और गाना गाने लगी। राज-कुमारी ने अपने आंसू पोंछ डाले और वह भी खुश दिखाई देने लगी।

लेकिन राजा की समझ में कुछ नहीं आया। उसने राजकुमारी से इसका कारण पूछा तो वह बोली, "मैंने तो पहले ही आपको सारी कहानी बता दी थी। आपके बड़े और मंझले राजकुमार ने छोटे राजकुमार के साथ धोखा किया है। इन्होंने आपको भी धोखा दिया है। लेकिन अब आपका छोटा राजकुमार यहां पर आ पहुंचा है। इसीलिए मुझे बहुत खुशी हो रही है। उसीके साथ मेरी शादी हुई है और मैं उसके साथ ही सुखी रह सकती हूं।"

फिर उसने मैले-कुचैले कपड़े पहने एक आदमी की ओर इशारा करते हुए कहा, "वह रहा आपका छोटा राजकुमार।"

राजा ने भी अपने छोटे लड़के को पहचान लिया। अब राजा ने अपने छोटे बेटे के बारे में अपने विचार बदल दिए। अब वह उसको बहुत समझदार और बहादुर मानने लगा और उससे बहुत अधिक प्यार करने लगा। उसने उसको राजगद्दी पर बिठाने का निश्चय किया। बड़े और मंझले राजकुमार ने अपने छोटे भाई को ही धोखा नहीं दिया था बल्कि राजा को भी धोखा दिया था।

इससे राजा उनसे बहुत नाराज़ था। उसने उन दोनों को अपने राज्य से निकलवा दिया। इसके बाद बड़ी धूमधाम के साथ राजकुमारी के साथ राजकुमार का विवाह हुआ और दोनों सुख से रहने लगे।

लेकिन राजकुमार उस लोमड़ी को नहीं भूला था, जिसने उसकी सहायता की थी। एक दिन समय निकालकर वह जंगल में उस लोमड़ी की खोज में निकला। बहुत ढूंढ़ने के बाद एक पेड़ के खोखले भाग में उसने उस लोमड़ी को चुपचाप बैठे हुए देखा।

लोमड़ी बहुत उदास थी और पहले से बहुत ज़्यादा दुबली भी हो गई थी। राजकुमार को देखते ही लोमड़ी ने उसे पहचान लिया और कहा, "आह, कहो राजकुमार आज इधर कैसे भूल पड़े।"

राजकुमार ने कहा, "मैं आज तुम्हें ही ढूंढ़ने के लिए आया हूं। चलो, मेरे बाग में आराम से रहना। वहां तुम्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं होगी। यहां तो जंगल में तुम्हें खाने-पीने की तकलीफ होती होगी और जंगली जानवरों और शिकारियों का डर बना रहता होगा!"

लोमड़ी ने कहा, "नहीं राजकुमार, मैं यहां ठीक हूं, और भला अब तुम्हें मेरे दुःख से क्या लेना-देना? तुम्हारा काम निकल गया। अब तुम सुख से अपने राज में रहो।"

राजकुमार बोला, "नहीं, तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है। मैं तुम्हें इनाम देना चाहता हूं और अपने साथ ही रखना चाहता हूं। राजकुमारी भी बहुत खुश होगी। वह भी तुमसे मिलना चाहती है।"

लोमड़ी बोली, "अगर तुम सचमुच मुझे इनाम देना चाहते हो तो मेरा एक काम कर दो। मैंने तुमसे पहले भी कहा था कि तुम तीर चलाकर मुझे मार दो। इसीसे मेरा लाभ होगा। असल में, एक जादूगर ने मुझ पर जादू कर रखा है। मैं लोमड़ी नहीं हूं।

मुझे उसके जादू के प्रभाव से लोमड़ी के रूप में रहना पड़ रहा है। मैं तो उसी देश का राजकुमार हूं, जहां की राजकुमारी से तुम्हारा विवाह हुआ है। असल में वह राजकुमारी मेरी छोटी बहन है। अगर तुम तीर चलाकर मुझे मार दोगे तो इस जादू से मुझे मुक्ति मिल जाएगी और मैं फिर अपने देश लौट सकूंगा।"

राजकुमार को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने फौरन अपने धनुष पर तीर चढ़ाया और लोमड़ी की ओर छोड़ दिया। तीर के लगते ही लोमड़ी मर गई और उसमें से एक सुन्दर-सा राजकुमार निकल आया। फिर दोनों राजकुमार आपस में गले मिले। इसके बाद दोनों राजकुमार वापस महल में लौट आए। वहां राजकुमारी अपने भाई से मिलकर बहुत खुश हुई।



जादूगर का नाम

एक समय की बात है कि एक राजा के राज्य में एक गरीब आदमी रहता था। उसकी अपनी एक छोटी-सी चक्की थी। किसी तरह आटा पीसकर वह अपना काम चलाता था। उसके एक लड़की थी। वह बहुत ही सुन्दर थी। यह लड़की जितनी सुन्दर थी, उतनी ही समझदार और होशियार भी थी। वह काम-काज में अपने पिता का हाथ बंटाती थी। चक्की वाले को उससे बड़ी मदद मिलती थी। वह रात-दिन अपनी लड़की के गुण गाया करता था। कोई भी मिलता था तो वह उससे अपनी बेटी की तारीफ किए बिना नहीं रहता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि चक्कीवाले को किसी काम से महल में जाना पड़ा। जब वह अपना काम खत्म करके महल से लौट रहा था तो अचानक उधर से राजा आ निकला। राजा चक्की वाले को जानता था। उसने वैसे ही उससे पूछ लिया, "कहो भाई, क्या हाल है? आजकल तुम्हारा काम कैसे चल रहा है?"

चक्कीवाले ने आदर से झुककर कहा, "सरकार, सब आपकी कृपा है। किसी तरह गुजर हो रही है। वैसे मुझे किसी बात की फिक्र नहीं है। मेरी बेटी सारा काम संभाल लेती है।"

राजा बोला, "अच्छा, तब तो बड़ी खुशी की बात है।"

इसपर चक्कीवाला राजा के सामने ज़रा डींग मारते हुए बोला, "जी हां, ऐसी लड़की आपने देखी नहीं होगी। कम-से-कम इस शहर में तो ऐसी समझदार लड़की कहीं नहीं मिलेगी। बड़ी होशियार है। उसे कई तरह के काम आते हैं।"

राजा बोला, "अच्छा, उसे कौन-कौन से काम आते हैं?"

चक्कीवाला बोला, "अरे हुज़ूर, यह पूछिए कि उसे कौन-सा काम नहीं आता! अब देखिए ना, आपके महल के गोदामों में यह जो रूई रखी हुई है, मेरी बेटी चाहे तो इसे कातकर सोना बना सकती है!"

राजा ने आश्चर्य से कहा, "अच्छा, ऐसी बात है! तब तो तुम ऐसा करना, ज़रा उसको जल्दी ही हमारे महल में भेज देना। मैं देखना चाहता हूं कि वह रूई को कातकर सोना कैसे बनाती है!"

राजा सोने का बहुत शौकीन था। उसे रात-दिन सोना बटोरने की फिक्र रहती थी। वह मन ही मन बड़ा खुश हुआ कि चलो इस तरह सारी रूई सोने में बदल जाएगी।

जब राजा चला गया तो चक्की वाले को अपनी गलती मालूम हुई। वह पछताने लगा कि मैंने राजा के सामने इस तरह बढ़ा-चढ़ाकर बातें क्यों कीं! लेकिन अब क्या हो सकता था! वह राजा को यह नहीं कह सकता था कि उसने झूठ बोला था। वह

चुपचाप घर पहुंचा। घर जाकर उसने अपनी लड़की से कहा, "बेटी, तुम्हारी होशियारी और समझदारी की खबर राजा तक पहुंच चुकी है। वे तुमसे मिलना चाहते हैं। जल्दी तैयार हो जाओ। तुम्हें इसी समय मेरे साथ महल में चलना है।"

यह सुनकर लड़की बड़ी खुश हुई। थोड़ी ही देर में वह सज-धजकर महल में जाने के लिए तैयार हो गई। चक्कीवाला अपनी लड़की को लेकर राजा के पास पहुंचा। राजा फौरन लड़की को उस बड़े-से गोदाम में ले गया, जहां रूई भरी हुई थी। राजा ने लड़की के लिए एक चर्खा मंगवा दिया और कहा, "लो, यह चर्खा है। यहां बैठो। इससे रूई कातकर मेरे लिए सोना बना डालो। तुम्हारे पिता ने मुझे बताया है कि तुम रूई को कातकर सोना बना सकती हो। मैं कल सुबह आकर देखूंगा कि तुमने क्या काम किया है। अगर तुमने सोना नहीं बनाया तो मैं तुम्हारी गर्दन कटवा दूंगा।"

यह कहकर राजा वापस महल में लौट गया। बेचारी लड़की! उसकी तो समझ में ही नहीं आया कि क्या हो गया। वह तो बड़ी खुशी-खुशी अपने पिता के साथ महल में आई थी। उसने सोचा था कि राजा जी उसकी तारीफ करेंगे और उसे इनाम देंगे। यहां तो बात ही उल्टी हो गई। उसने कभी सपने में भी नहीं सुना था कि रूई को कातकर सोना बनाया जा सकता है—और अब राजा ने उसको ऐसा ही करने का हुक्म दिया था! वह फूट-फूटकर रोने लगी और अपनी तकदीर को कोसने लगी।

धीरे-धीरे शाम हो गई। लड़की हाथों से अपना मुंह छिपाए रोती रही। आंसुओं से ज़मीन गीली हो गई। उस बड़े-से गोदाम में वह अकेली बैठी रो रही थी। वहां उसे मनाने वाला कोई नहीं था। अचानक थोड़ी देर बाद गोदाम का दरवाज़ा कुछ चर-मराया। लड़की ने आवाज़ सुनकर सिर उठाया तो देखा कि एक दुबला-पतला नाटा और बहुत भद्दा-सा बूढ़ा लंगड़ाता हुआ उसकी ओर आ रहा है। लड़की ने समझा कि राजा का कोई बूढ़ा नौकर

है और उसे रोते हुए देखकर उसे मनाने के लिए यहां आ गया है।

बूढ़े ने पास आकर कहा, "बेटी, तुम क्यों रो रही हो? इस तरह रो-रोकर तो तुम अपनी आंखें ही फोड़ लोगी। मुझे बताओ, क्या बात है! मैं तुम्हारी मदद करूंगा।"

लड़की सिसकते हुए बोली, "बाबा, क्या बताऊं! मेरी तो तकदीर ही फूट गई। राजा ने कहा है कि मैं इस सारी रूई को कातकर इसका सोना बना दूं। अगर कल सुबह तक मैंने यह काम खत्म नहीं किया तो वह मेरा सिर कटवा देगा। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं कैसे यह काम करूं।"

बूढ़े ने मुस्कराते हुए कहा, "तो तुम घबराती क्यों हो! मैंने कहा न कि मैं तुम्हारी मदद करूंगा। अब बताओ, मैं अगर तुम्हारा काम कर दूं तो तुम मुझे क्या दोगी?"

लड़की बोली, "अगर तुम मेरे लिए यह काम कर दो तो मैं तुम्हें अपना यह सोने का हार दे दूंगी।"

वह नाटा बूढ़ा राज़ी हो गया और चर्खे के पास बैठकर रूई कातने लगा। 'भन्न-भन्न' की आवाज़ होने लगी और उसकी उंगलियों में से चमचमाते हुए सोने के धागे निकलने लगे। देखते ही देखते वहां सोने के धागों का ढेर लग गया। सवेरा होने से पहले ही बूढ़ा सारी रूई कात चुका था। फिर वह अपना इनाम लेकर वहां से चुपचाप चला गया।

जब सवेरा हुआ तो राजा वहां आ पहुंचा। गोदाम में पैर रखते ही राजा की आंखें आश्चर्य से फटी रह गईं। उसने देखा कि लड़की ने सारी रूई कात डाली है और वहां सोने के धागों का ढेर लगा है। राजा को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसने देखा तो सचमुच सोने के धागे थे। राजा बड़ा खुश हुआ, लेकिन साथ ही उसके मन में लालच हो आया। वह लड़की को रूई के दूसरे गोदाम में ले गया और वहां उसे बन्द करते हुए बोला, "तुम यहां बैठो। तुम्हारे खाने-पीने के लिए मैं

बहुत अच्छी-अच्छी चीज़ें भिजवाता हूं। मैं तुम्हारे काम से बहुत खुश हूं, लेकिन आज तुम्हें इस गोदाम की रूई कातनी पड़ेगी। कल फिर मैं सुबह आऊंगा और देखूंगा। अगर काम पूरा नहीं होगा तो तुम्हें फांसी दे दी जाएगी।" यह कहकर राजा वहां से चला गया।

राजा के जाने के बाद लड़की ने बाहर झांककर देखा तो वहां सिपाही लोग तलवारें लिए पहरा दे रहे थे। वह वहां से भाग भी नहीं सकती थी। वह निराश होकर फिर से अन्दर आकर बैठ गई। इतने में दासियां उसके लिए खाने की बहुत-सी बढ़िया-बढ़िया चीज़ें लाकर उसके सामने रख गईं। लेकिन लड़की ने उसमें से किसी चीज़ को छुआ तक नहीं। वह फिर से उदास हो गई थी। रोते-रोते वह सोचने लगी—हे भगवान! यह कैसी मुसीबत मेरे गले आ पड़ी है। इतनी सारी रूई को कौन कातेगा, और भला कौन इससे सोना बनाएगा? वह दिन-भर इसी तरह सोचती रही और उदास बैठी रही। शाम होने पर जब वह रोने लगी तो उसी तरह दरवाज़ा चरमराया और वही बूढ़ा आदमी अपने टेढ़े-मेढ़े पैरों से चलता हुआ उसके सामने आ खड़ा हुआ। उसने आते ही कहा, "अरे-अरे, तुम फिर रोने लगी! रोती क्यों हो? बताओ, मैं तुम्हारा काम कर दूं तो आज मुझे क्या दोगी?"

लड़की ने अपने आंसू पोंछते हुए कहा, "मैं तुम्हें अपनी यह हीरे की अंगूठी दे दूंगी।"

वह नाटा बूढ़ा राज़ी हो गया और बैठकर बड़ी तेज़ी से चर्खा कातने लगा। देखते-देखते उसने सारी रूई कात डाली और सोने के धागों का ढेर लगा दिया। सवेरा होने से पहले ही बूढ़ा अपना काम खत्म करके और इनाम लेकर वहां से चलता बना।

सवेरा होने पर राजा वहां पहुंचा। रूई की जगह सोने के धागों का ढेर देखकर उसकी खुशी की सीमा न रही। अब उसे और भी लालच हो आया। वह उस लड़की को उससे भी बड़े गोदाम में ले गया और बोला, "देखो, मैं तुमसे बहुत खुश हूं।

लेकिन आज तुम्हें इतनी रूई और कातनी पड़ेगी और इसका सोना बनाना पड़ेगा। अगर कल सुबह तक यह काम कर दोगी तो मैं तुमसे शादी कर लूंगा और तुम्हें अपनी रानी बना लूंगा।"

राजा के जाने पर लड़की फिर उदास हो गई। वह रोना शुरू करने ही वाली थी कि इतने में फिर से दरवाज़ा चरमराया और वह नाटा बूढ़ा आदमी अपनी भद्दी चाल से फुदकता हुआ उसके सामने आ खड़ा हुआ। बूढ़ा बोला, "तुम चिन्ता क्यों करती हो ? मैं शाम को आकर तुम्हारा यह काम कर दूंगा, लेकिन बताओ, तुम आज इस काम के बदले में मुझे क्या इनाम दोगी ?"

अब लड़की कुछ चक्कर में पड़ गई। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या जवाब दे। अब तो उसके पास इनाम देने के लिए कुछ भी नहीं बचा था। लेकिन इतने में बूढ़े ने एक चाल सोच ली और कहा, "चलो, तुम्हारे पास अभी देने के लिए कुछ न हो तो कोई बात नहीं। लेकिन तुम्हें एक प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी। जब तुम रानी बन जाओगी और जब तुम्हारे कोई बच्चा होगा तो तुम अपना पहला बच्चा इनाम में मुझे दे दोगी।"

लड़की को यह शर्त कुछ अजीब-सी लगी, लेकिन फिर उसने सोचा कि प्रतिज्ञा करने के अलावा और कोई चारा नहीं। वह राज़ी हो गई।

शाम को आकर बूढ़ा फिर से रूई कातने के लिए बैठ गया। आज वह बहुत खुश था और बड़ी तेज़ी से चर्खा चला रहा था। थोड़ी ही देर में उसने सारी रूई कात डाली और सोने के धागों का ढेर लगा दिया। आज ढेर इतना ऊंचा था कि छत को छू रहा था। काम खत्म करके बूढ़ा बोला, "अच्छा, अब मैं जाता हूं। लेकिन याद रखना, अपनी प्रतिज्ञा मत भूलना।" यह कहकर वह वहां से चला गया।

सवेरा होते ही राजा वहां पहुंचा। सोने के ढेर को देखकर उसका मन नाचने लगा। उसने लड़की को शाबाशी दी और उसे महल में ले गया।

दूसरे ही दिन राजा ने धूम-धाम के साथ उस लड़की को अपनी रानी बना लिया। चक्कीवाले की लड़की अब रानी बन गई और बड़ी शान के साथ महल में रहने लगी। वह अपने सारे दुःख भूल गई। कुछ ही दिनों में उसे यह भी याद नहीं रहा कि उसने उस नाटे बूढ़े से कोई वादा किया था। धीरे-धीरे दिन बीतने लगे।

कुछ दिनों बाद रानी के एक बच्चा हुआ। बड़ा सुन्दर नन्हा-मुन्ना, गोल-मटोल-सा बच्चा! रानी की खुशी की सीमा न थी। वह दिन-भर बच्चे को खिलाती और लोरियां गाकर सुलाती थी। एक दिन वह आराम से बैठकर सोच रही थी कि उसके जैसी भाग्यवान लड़की दुनिया में और कौन होगी। उसे किसी बात की कमी नहीं थी। वह इतने बड़े राज्य की रानी थी। हीरे-जवाहरात, हाथी-घोड़े, नौकर-चाकर सभी कुछ तो था उसके पास। वह इसी तरह सोच रही थी कि अचानक दरवाज़ा चरमराया। और वही नाटा बूढ़ा शरारत से मुस्कराता हुआ रानी के सामने आ खड़ा हुआ।

"तुम क्यों आए हो? क्या चाहिए तुम्हें?" रानी ने घबराकर पूछा और बच्चे को कसकर अपनी छाती से चिपटा लिया। रानी डर के मारे थर-थर कांप रही थी।

बूढ़े ने मुस्कराते हुए कहा, "मुझे तुम्हारा यह बच्चा चाहिए। जल्दी से इसे मुझे सौंप दो। क्या तुम अपना वादा भूल गईं?"

यह सुनकर रानी फूट-फूटकर रोने लगी। उसने रोते-सिसकते कहा, "बाबा, मुझ पर दया करो। तुमने मेरी बड़ी मदद की है। मैं कभी तुम्हारा उपकार नहीं भूलूंगी। इस बार तो मुझे माफ कर दो। मेरा बच्चा मुझसे मत छीनो। इसके बदले तुम जो चाहे मांग लो, लेकिन इसे मेरे पास रहने दो।"

उसको इस तरह रोते हुए देखकर बूढ़ा थोड़ी देर के लिए सोच में पड़ गया। फिर वह बोला, "अच्छा, मैं तुम्हें तीन दिन

का समय देता हूं । तुम सोचकर बताओ कि मेरा नाम क्या है । अगर तुम ठीक-ठीक मेरा नाम बता दोगी तो मैं तुम्हें माफ कर दूंगा और तुमसे बच्चा नहीं लूंगा ।"

यह कहकर वह बूढ़ा जिस तरह आया था, उसी तरह चुप-चाप वहां से चला गया।

रानी को रात-भर नींद नहीं आई । वह कोई ऐसा तरीका खोजना चाहती थी जिससे बच्चा उसीके पास रहे । वह नाटा बूढ़ा इसके लिए बड़ी टेढ़ी शर्त रख गया था। भला रानी कैसे बता सकती थी कि उसका नाम क्या है ! वह रात-भर तरह-तरह के नाम सोचती रही। उसने वे सारे ही नाम याद कर डाले जो अब तक उसने सुने थे । सुबह जब बूढ़ा आया तो वह एक-एक करके नाम गिनाने लगी, लेकिन हर नाम पर बूढ़ा इन्कार कर देता था । वह मुस्कराकर कहता था, "नहीं, यह मेरा नाम नहीं है ।"

दूसरे दिन रानी ने अपने कई नौकरों को शहर में इधर-उधर दौड़ाया और उनसे तरह-तरह के अजीब-से नाम ढूंढ़कर लाने के लिए कहा। दूसरे दिन जब वह बूढ़ा आया तो रानी उसे फिर नाम गिनाने लगी। आज उसने बहुत टेढ़े-मेढ़े और अजीब-से नाम सुनाए, जैसे 'कुबड़ा', 'ऐंचकताना', 'डेढ़टंगा' वगैरह-वगैरह ।

रानी ने सोचा कि इस तरह बूढ़ा चिढ़ जाएगा और अपना असली नाम बता देगा। लेकिन वह शरारत से मुस्कराते हुए बोला, "नहीं-नहीं, इनमें से एक भी मेरा नाम नहीं है। मैं जाता हूं । कल ज़रूर मेरा नाम ठीक-ठीक बता देना, वरना मैं तुम्हारा बच्चा ले जाऊंगा ।"

रानी की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। दुनिया-भर के अच्छे और बुरे नाम वह उसको सुना चुकी थी । बूढ़े का असली नाम क्या हो सकता है, इस सम्बन्ध में उसका दिमाग ही काम नहीं कर रहा था । उसने बहुत सोचा, बहुत सोचा और अन्त में हार मान ली । उसने तय किया कि अब वह अपने वादे के

अनुसार बूढ़े को अपना बच्चा सौंप देगी। इसके अलावा और कोई चारा नहीं था।

वह इस तरह उदास बैठी हुई थी कि अचानक उसका एक नौकर दौड़ता हुआ उसके पास आया। वह भी उसके लिए नये से नये नाम खोजने के लिए गया था। उसने आकर कहा, "रानी जी, नाम तो मुझे कोई नया नहीं मिला, लेकिन मैं आपको एक बात बताने आया हूं। मैं नये नामों की खोज में दूर गांवों में गया था। लौटते वक्त पहाड़ के पास ही घने जंगल में मैं रास्ता भूल गया। जंगल में भटकते-भटकते मैं ऐसी घनी झाड़ियों में पहुंचा, जिनमें से कोई जंगली जानवर भी नहीं निकल सकता था। वहां मैंने एक अजीब-से नाटे-बूढ़े को अपने लंगड़े पैरों से नाचते हुए देखा। उसने एक झाड़ी के पास अपने लिए एक छोटी-सी कुटिया बना रखी थी। उस कुटिया के सामने उसका चूल्हा जल रहा था और वहां वह नाच रहा था। उसने अपने सिर पर ताज़ी सिकी हुई कुछ बड़ी-छोटी रोटियां एक तसले में ले रखी थीं। जब वह नाचता था तो रोटियां तसले से नीचे गिरने को हो आती थीं, लेकिन एक भी रोटी गिरी नहीं। वह मगन होकर नाच रहा था और खुशी से गाना गा रहा था।

"उसके गाने का मतलब था: आज मैंने बढ़िया खाना बनाया है, और मैं भरपेट खाऊंगा। कल तो मुझे रानी का बच्चा लेने जाना है ही। बच्चा मुझे मिल ही जाएगा, क्योंकि रानी को पता ही नहीं है और न कभी पता चलेगा कि मेरा नाम है—रम्पल-स्टिल्ट्स-किन!"

यह सुनकर रानी खुशी से नाच उठी। उसे अब विश्वास हो गया था कि जंगल में नाचने वाला बूढ़ा वही था और यही उसका असली नाम है। उसने दो-तीन बार रटकर यह नाम अच्छी तरह याद कर लिया। और फिर नौकर को इनाम देकर वहां से विदा कर दिया।

दूसरे दिन सवेरे वह नाटा बूढ़ा उसी तरह फुदकता हुआ



उसके कमरे में आ पहुंचा। आज वह बहुत खुश था। वह बच्चे को अपने घर ले जाने के लिए एक खूबसूरत-सा कंबल भी अपने साथ लाया था।

कमरे में आते ही उसने उस छोटे-से कंबल को रानी के सामने बिछा दिया और फिर रानी से कहा—"हां, तो बताओ, मेरा असली नाम क्या है ? आज तीसरा दिन है। अगर तुम ठीक-ठीक मेरा नाम न बता सको तो चुपचाप बच्चे को मेरे कंबल पर लिटा दो। मैं इसीमें लपेटकर उसे ले जाऊंगा, ताकि उसे ठंड न लगे।"

रानी को उसका असली नाम तो मालूम हो ही गया था, लेकिन वह इस तरह देखने लगी जैसे उसे अभी नाम मालूम नहीं हुआ था। उसने कहा, "तुम्हारा नाम विलियम है।"

"नहीं, मेरा नाम यह नहीं है !" बूढ़े ने खिलखिलाते हुए कहा।

"तो फिर जार्ज होगा ?"

"नहीं, यह भी मेरा नाम नहीं है !" और वह कमरे में खुशी से उछलने लगा।

रानी ने फिर कहा, "अगर जार्ज नहीं है तो जॉन होगा।"

"नहीं, यह भी मेरा नाम नहीं है।" बूढ़े ने खूब ज़ोर से कहा और फिर कंबल की ओर इशारा करता हुआ बोला, "लाओ अब बेकार का बहाना न बनाओ और बच्चे को कंबल पर लिटा दो।"

अब मौका देखकर रानी बोली, "तो फिर तुम्हारा नाम रम्पल-स्टिल्ट्स-किन है।"

यह सुनते ही बूढ़ा चौंक पड़ा। उसे उम्मीद भी नहीं थी कि रानी को उसका असली नाम भी कभी मालूम हो सकेगा। उसे बहुत बुरा लगा। लेकिन अब वह कर ही क्या सकता था ! वह मारे गुस्से के ज़मीन पर ज़ोर-ज़ोर से पैर पटकने लगा और बोला, "तुमने जादू किया है ! तुम्हें किसी भूत या जादूगर ने मेरा नाम बताया है। मैं उन लोगों को ठीक कर दूंगा !" बूढ़ा बहुत ज़ोर-

ज़ोर से चीख रहा था और ज़मीन पर पैर पटकता जा रहा था। इसी बीच उसने एक बार इतने ज़ोर से पैर पटका कि उसका पैर ज़मीन में धंस गया।

बड़ी मुश्किल से ज़ोर लगाकर बूढ़े ने अपना पैर ज़मीन में से बाहर निकाला। उसे बहुत चोट आई थी। वह ज़ोर-ज़ोर से बड़-बड़ाता हुआ और एक पैर से लंगड़ाता हुआ उस कमरे से बाहर भाग गया। जाते-जाते वह अपना कंबल भी उठा ले गया।

इसके बाद वह बूढ़ा फिर कभी नहीं आया और रानी आराम से रहने लगी।

भेड़िया और बकरी के बच्चे



एक जंगल के किनारे एक बूढ़ी बकरी ने अपना घर बना रखा था। उसके सात बच्चे थे। सातों मेमनों के साथ वह आराम से अपने दिन गुज़ार रही थी। बकरी बड़ी मेहनती और काम-काजी थी। काम तो उसे बहुत करना ही पड़ता था, क्योंकि वह सात बच्चों की मां थी। सातों छोटे-छोटे बच्चों को वह अपने घर में बन्द करके जाती थी।

बकरी को हर रोज़ अपना दूध बेचने के लिए जाना पड़ता था। बदले में जो दो-चार पैसे उसे मिल जाते थे, उनसे वह अपने बच्चों के लिए खाने-पीने की चीज़ें और कपड़े वगैरह खरीदती थी। उसका घर बहुत सुन्दर था। उसमें हर तरह की आराम की चीज़ें थीं। मेमने दिन-भर खूब खेलते थे। बकरी जाने से पहले

उन सबको गिनकर घर में बन्द कर देती थी। बाहर का दरवाज़ा भी जाने से पहले उनसे कहकर अन्दर से बन्द करवा देती थी।

इस तरह सब कुछ बड़े मज़े से चल रहा था। अचानक उनके लिए एक मुसीबत पैदा हो गई। पहाड़ पर से कोई बहुत ही चालाक और खूंखार भेड़िया उधर आ निकला। वह उस मकान का चक्कर लगाने लगा। पास आने की उसकी हिम्मत नहीं होती थी, क्योंकि वह बूढ़ी बकरी से डरता था।

अब जब बूढ़ी बकरी अपना दूध बेचने के लिए जाने लगी तो उसे अपने बच्चों की चिन्ता हुई। वह उन्हें अपने साथ नहीं ले जा सकती थी। इसलिए उसने सबसे बड़े मेमने को अपने पास बुलाया और उससे कहा, "देखो बेटा, तुम सबसे बड़े हो। तुम्हारे सभी भाई-बहिन तुमसे छोटे हैं। तुम ज़रा होशियारी से रहना। अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लेना। जब तक मैं न आ जाऊं, तब तक दरवाज़ा मत खोलना। वह भेड़िया बड़ा चालाक है। मेरे जाने के बाद वह तुम लोगों को खाने के लिए यहां आएगा और घर में घुसने की कोशिश करेगा। तुम किसी भी हालत में दरवाज़ा मत खोलना।"

बड़ा मेमना 'मैं-मैं' करके बोला, "ठीक है, मां, तुम किसी तरह की फिक्र मत करो। मुझे उस चालाक भेड़िये के बारे में पता है। जब तक तुम नहीं आओगी, मैं दरवाज़ा नहीं खोलूंगा।"

बूढ़ी बकरी बोली, "ठीक है, तुम ऐसा ही करना। लेकिन याद रखो, वह भेड़िया बड़ा चालाक है। वह तुमसे दरवाज़ा खुलवाने के लिए कई तरह के बहाने बनाएगा। हो सकता है, वह यहां आकर दरवाज़े के पीछे से मेरी बोली की नकल करे और तुमको धोखा देने की कोशिश करे लेकिन तुम उसके बहकावे में मत आना। वह कितनी ही कोशिश करे लेकिन अपनी मोटी आवाज़ और काले पैर छिपा नहीं सकेगा। तुम उसे पहचान लेना और उसकी चाल में मत आना। वरना, वह अन्दर घुसकर तुममें से एक को भी ज़िन्दा नहीं छोड़ेगा और सबको खा जाएगा।" यह कहकर बूढ़ी

बकरी वहां से रवाना हो गई। बड़े मेमने ने भीतर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। फिर सब बच्चे खिड़की में इकट्ठे होकर हाथ हिला-हिलाकर अपनी मां को विदा करने लगे।

बूढ़ा भेड़िया एक पेड़ के पीछे छिपकर बैठा हुआ था और वहां से सब कुछ देख रहा था। बकरी के जाने के थोड़ी ही देर बाद वह दरवाज़े पर जा पहुंचा। बच्चों को खाने के लिए उसकी लार टपकने लगी। उसने अपनी मोटी और भद्दी आवाज़ को छिपाते हुए बड़े आहिस्ता से दरवाज़ा खटखटाया और कहा, "खोलो बच्चो, दरवाज़ा खोलो। मैं आ गई। अपनी मां से डरने की तुम्हें कोई ज़रूरत नहीं है। तुम दरवाज़ा खोल दो। मैं तुम्हारे लिए बहुत अच्छी-अच्छी मिठाइयां लाई हूं।"

बकरी के बच्चों ने समझा कि मां आ गई है इसलिए वे सब उससे मिलने के लिए दरवाज़े की तरफ दौड़े। बड़ा मेमना उनसे ज़्यादा समझदार था। वह किसी भी हालत में दरवाज़ा खोलने के लिए राज़ी नहीं हो रहा था। लेकिन सबसे छोटा बच्चा बहुत देर तक अपनी मां से अलग नहीं रह सकता था। उसने ज़िद करके अपने बड़े भाई से कहा, "दरवाज़ा खोल दो न! बाहर मां खड़ी आवाज़ दे रही है।"

लेकिन बड़े मेमने ने दरवाज़ा नहीं खोला। भेड़िये की आवाज़ सुनकर वह बोला, "तुम मां नहीं हो। मेरी मां तो सामान लाने के लिए बाज़ार गई हुई है। भेड़िये भाई, हम लोगों ने तुम्हें पहचान लिया है! तुम यहां से चले जाओ।"

भेड़िया निराश होकर वहां से लौट आया। लेकिन अभी उसने हार नहीं मानी थी। बच्चों को खाने के लिए उसका मन ललचा रहा था। अचानक उसे एक चाल सूझी और वह दौड़ता हुआ शहर में एक दवाई वाले के पास पहुंचा और अपनी आवाज़ मीठी करने के लिए उससे कुछ मीठी गोलियां मांगीं।

दवाई वाले ने उसे अपने पास की सारी मीठी गोलियां दे दीं। भेड़िया गोलियां खाकर, गुर्राकर बोला, "ये कैसी गोलियां हैं!

इनसे तो मेरी आवाज़ मीठी हुई ही नहीं। जल्दी से कोई ऐसी दवाई दो, जिससे मेरी आवाज़ मीठी हो जाए। वरना मैं तुम्हें खा जाऊंगा।"

दवाई वाला डर गया लेकिन उसके पास आवाज़ को मीठी बनाने की कोई दवाई नहीं थी। उसने भेड़िये को बहकाने के लिए उसे बहुत-सी खड़िया-मिट्टी खाने को दे दी। भेड़िये को देर हो रही थी, इसलिए वह जल्दी-जल्दी खड़िया खाकर दौड़ता हुआ फिर से बकरी के घर पर जा पहुंचा। खड़िया खाने से उसकी आवाज़ कुछ साफ हो गई थी। उसने दरवाज़ा खटखटाया और कहा, "खोलो बच्चो, खोलो! मैं आ गई। मैं तुम्हारे लिए बहुत अच्छी-अच्छी चीज़ें और कपड़े लाई हूं।" यह कहकर वह अपने दो पंजे दरवाज़े पर टिकाकर खड़ा हो गया और सूराख में से देखने लगा कि देखें बच्चे क्या करते हैं।

बकरी के बच्चे बहुत डरे हुए थे। उन्होंने जब दरवाज़े पर आवाज़ सुनी तो वे भी चुपचाप सूराख में से झांकने लगे। उन्हें दरवाज़े पर दो बड़े-बड़े काले पंजे दिखाई दिए। वे लोग चिल्लाए, "अरे यह तो वही भेड़िया है, भेड़िया! देखो, इसके काले-काले पंजे दिखाई दे रहे हैं।"

बड़े मेमने ने अन्दर से चिल्लाकर कहा, "भाग जा भेड़िये, भाग जा! दरवाज़ा नहीं खुलेगा।" यह सुनकर भेड़िया फिर अपना-सा मुंह लेकर वहां से लौट आया।

कुछ दूर जाकर भेड़िये ने सोचा, ये बच्चे बड़े चालाक मालूम होते हैं। मुझे कोई और चाल सोचनी पड़ेगी। मुझे जल्दी ही कुछ करना चाहिए वरना फिर मौका हाथ से निकल जाएगा और बकरी वापस लौट आएगी। वह दौड़ता हुआ एक नानबाई के यहां पहुंचा। नानबाई आटा सानकर रोटी बनाने की तैयारी कर रहा था। भेड़िये ने कहा, "भैया, मेरे पंजे जल गए हैं। मुझे थोड़ा आटा दे दो।"

नानबाई ने उसको आटा दे दिया। इस आटे को उसने अच्छी

तरह से अपने पंजों पर मल लिया। आटे में सनने के कारण अब उसके पंजे सफेद-से हो गए थे। वह फिर से दौड़ता हुआ बकरी के घर जा पहुंचा और दरवाज़ा खटखटाया। बकरी के बच्चों ने इस बार जब सूराख से देखा तो उन्हें भेड़िये के काले पंजे नहीं दिखाई दिए। भेड़िया इस बार चालाकी करके सूराख के सामने आटे में सने हुए पंजे रखे हुए था। बकरी के बच्चों ने समझा कि इस बार सचमुच मां आ गई है, और उन्होंने तुरन्त दरवाजा खोल दिया।

दरवाज़े के खुलते ही भेड़िया चीखता हुआ घर में घुस गया। बच्चे डरकर इधर-उधर भागे, लेकिन भेड़िये ने दौड़-दौड़कर एक-एक को पकड़ा और सीधे अपने गले के नीचे उतार लिया। एक-एक करके वह छः बच्चों को निगल गया। लेकिन सातवां और सबसे छोटा बच्चा जान बचाकर एक डिब्बे में छिप गया। भेड़िये ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। अब उसका पेट भर गया था। इसके अलावा, वह इधर-उधर की भाग-दौड़ से बहुत थक भी गया था। वह घर से बाहर आया। कुछ दूर एक झाड़ी के पास पहुंचकर उसकी छाया में लेटकर वह आराम करने लगा। थोड़ी ही देर में उसे गहरी नींद आ गई।

इतने में उधर बकरी लौटकर अपने घर आई। दरवाज़ा खुला देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। मारे डर के उसका दिल धड़कने लगा। कमरे में घुसते ही उसे मालूम हो गया कि कोई दुर्घटना घटी है। उसने ज़ोर-ज़ोर से अपने बच्चों को आवाज़ दी। लेकिन बच्चे वहां होते तब तो बोलते। जब उसने सबसे छोटे बच्चे का नाम लेकर पुकारा तो वह मिमियाता हुआ डिब्बे से बाहर निकल आया। बाहर आते ही वह अपनी मां से चिपट गया और पूछने लगा, "मां, मां, वह भेड़िया कहां गया? वह मेरे सारे भाई-बहनों को खा गया!" बूढ़ी बकरी ने छोटे बच्चे को अपने गले से लगा लिया। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। वह बहुत दुःखी थी। अब घर में बैठने को उसका मन नहीं हो रहा था। वह एक

शाल ओढ़कर और छोटे बच्चे को साथ लेकर घर से बाहर निकल गई और इधर-उधर घूमने लगी।

घूमते-घूमते वे दोनों उस जगह जा पहुंचे जहां भेड़िया झाड़ी के नीचे लेटा आराम कर रहा था। वह बकरी के छः बच्चों को निगलकर बड़ा खुश मालूम हो रहा था और गहरी नींद में सोया पड़ा था।

उसको इस तरह सोया हुआ देखकर बकरी को बड़ा गुस्सा आया। वह उसे सज़ा देने के उपाय सोचने लगी। उसने ज़रा आगे बढ़कर भेड़िये के पेट को ध्यान से देखा। उसे लगा कि अन्दर कोई हिल-डुल रहा है। उसे यह समझते देर न लगी कि भेड़िये ने जल्दबाज़ी में बच्चों को सीधा उठाकर अपने गले से नीचे उतार लिया था। बकरी को लगा कि बच्चे अब भी भेड़िये के पेट में उछल-कूद मचा रहे हैं।

बूढ़ी बकरी दौड़ती हुई फिर से अपनी कुटिया में पहुंची और वहां से एक कैंची और सुई-धागा ले आई। फिर उसने आहिस्ता-आहिस्ता कैंची चलाकर भेड़िये के पेट में एक बड़ा-सा छेद कर दिया। छेद के होते ही उसमें से पहले बड़ा मेमना निकला, फिर उसके बाद उससे छोटा—इस तरह एक-एक करके सभी मेमने उछलते हुए बाहर निकल आए। बाहर आकर वे लोग अपनी मां के आसपास उछल-कूद मचाने लगे।

बूढ़ी बकरी ने फुसफुसाते हुए कहा, "चुप रहो, चुप रहो। धीरे बोलो। भेड़िया जाग जाएगा तो सारा खेल खराब हो जाएगा।"

इसके बाद बकरी ने अपने बच्चों को नाले के किनारे से बड़े-बड़े पत्थर उठा लाने के लिए कहा। बच्चे दौड़ते हुए गए और पत्थर उठा लाए। इन पत्थरों को बकरी ने बड़ी सफाई से भेड़िये के पेट में रखा और फिर धीरे-धीरे धागे से सीते हुए छेद बन्द कर दिया। भेड़िया इतनी गहरी नींद में सोया हुआ था कि उसे इस बात का पता ही नहीं चला। इसके बाद बकरी अपने बच्चों के



साथ दौड़ लगाती हुई सीधी अपनी कुटिया में भाग आई।

कुछ देर बाद भेड़िये की नींद खुली। वह जंभाई लेता हुआ उठ खड़ा हुआ। उसे अपना पेट कुछ भारी-भारी-सा लगा। उसने अपने पेट पर हाथ फेरते हुए सोचा, "आज मैंने कुछ ज़्यादा खाना खा लिया है। छह मेमने काफी होते हैं!"

जब वह मस्ती से चलता हुआ आगे बढ़ा तो उसके पेट में पत्थर खड़खड़ाने लगे। उसने सोचा, पेट में कोई गड़बड़ हो गई है। वह जल्दी-जल्दी कदम रखता हुआ नाले के किनारे पहुंचा। उसका जी घबरा रहा था और उसे प्यास भी लगी हुई थी। जब वह झुककर नाले में पानी पीने की कोशिश करने लगा तो उससे अपना वज़न संभालते नहीं बना। पेट में पड़े पत्थरों के भार के कारण वह मुंह के बल लुढ़कता हुआ पानी में जा गिरा। उसने पानी में से निकलने के लिए बहुत हाथ-पैर मारे, लेकिन भला वह पानी में से निकल ही कैसे सकता था! उसके पेट में पत्थरों का भार था। वह पानी में गहरा डूबता चला गया और फिर कभी पानी के ऊपर नहीं आ सका।

बकरी अपने सातों बच्चों के साथ फिर आराम से रहने लगी।



मेंढक राजकुमार

बहुत पुराने ज़माने की बात है कि एक देश में एक राजा राज्य करता था, लोग उसके राज्य में बड़े सुखी थे। राजा अपनी प्रजा का बहुत ध्यान रखता था। यह राजा अपने वचन का बड़ा पक्का था। एक बार जो बात कह देता था, उसे ज़रूर निभाता था। इस राजा की छः लड़कियां थीं। एक से एक बढ़कर रूपवती और गुणवती, लेकिन सबसे छोटी राजकुमारी का कोई जवाब नहीं था। वह सभी राजकुमारियों से अधिक सुन्दर थी और बड़ी समझदार भी थी। इसीलिए लोग उसे बहुत प्यार करते थे।

राजा के महल के पास ही एक जंगल था। लोगों का कहना था कि इस जंगल में भूत-प्रेत और जादूगर रहते हैं। जंगल के बीच में नींबू का एक पेड़ था और उसके नीचे पानी के एक बड़े-से हौज़ में फव्वारा चलता रहता था। पहले यहाँ कभी कोई बड़ा-सा महल था लेकिन अब तो इस फव्वारे को छोड़कर उस महल का कोई निशान बाकी नहीं बचा था।

एक दिन की बात है, छोटी राजकुमारी महल के बाग में खेल रही थी। उसके पास एक सुनहरी गेंद थी। वह कभी गेंद को उछालती थी और कभी उसे लुढ़काती थी और फिर उसे पकड़ने के लिए दौड़ती थी। वह इस तरह गेंद खेलते-खेलते बाग से बाहर निकल आई और जंगल की ओर चली गई।

राजकुमारी खेल में इतनी मस्त थी कि उसे पता ही नहीं चला और वह जंगल के बीच में जा पहुंची। जब वह हौज़ के पास पहुंची तो वहां फव्वारे को देखकर बड़ी खुश हुई। उसने पेड़ के

नीचे बैठकर थोड़ी देर आराम किया और फिर वह गेंद खेलने लगी। वह गेंद को ऊंची और उससे भी ऊंची उछालती थी, और फिर खुशी से चिल्लाती हुई उसे पकड़ने के लिए दौड़ती थी। एक बार अचानक गेंद उसके पैर की ठोकर से लुढ़कती हुई हौज़ में जा गिरी।

राजकुमारी दौड़ती हुई हौज़ के किनारे जा पहुंची और झुककर पानी में देखने लगी। उसकी गेंद पानी में गहरे डूबती चली जा रही थी। देखते-देखते गेंद पानी में गायब हो गई।

राजकुमारी को बड़ा दुःख हुआ। वह रोते-रोते बोली, "हाय, मेरी सुनहरी गेंद! मेरी गेंद कितनी अच्छी थी! अब मैं क्या करूं? अपनी गेंद पानी में से कैसे निकालूं?"

अचानक राजकुमारी ने सुना कि उसके पैरों के पास ही हौज़ में से टर्र-टर्र की आवाज़ आ रही है। यह किसी मेंढक की आवाज़ थी। राजकुमारी को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि मेंढक टर्र-टर्र की आवाज़ ज़रूर कर रहा था, लेकिन असल में वह आदमियों की बोली में कुछ बोलने की कोशिश कर रहा था। राजकुमारी ने नीचे झुककर सुना, सचमुच एक मेंढक टर्राता हुआ कह रहा था, "राजकुमारी, ओ राजकुमारी! क्या, हुआ, रोती क्यों हो? इस तरह रोओ मत और आंसू मत बहाओ।"

राजकुमारी ने देखा एक बड़ा-सा मेंढक पानी में से अपना सिर निकाले उसकी ओर देख रहा था। राजकुमारी को उसका सिर और बड़ी-बड़ी आंखें भद्दी लगीं। वह ऐसे मेंढक से बात नहीं करना चाहती थी। लेकिन यह मेंढक उसके साथ हमदर्दी दिखा रहा था। इसलिए वह आंसू पोंछते हुए बोली, "अच्छा, तुम बोल रहे हो, मेंढकराम! तुम्हारी टर्राहट मेरी समझ में नहीं आई। भला मैं आंसू न बहाऊं तो क्या करूं? देखो न, मेरी गेंद, सबसे अच्छी सुनहरी गेंद पानी में डूब गई!"

मेंढक बोला, "अच्छा बताओ, अगर मैं गेंद निकालकर तुम्हें

दे दूं तो मुझे क्या इनाम दोगी?"

राजकुमारी खुश होकर बोली, "अगर तुम मेरी गेंद को पानी में से निकाल दो तो मैं तुम्हें बहुत-सा इनाम दूंगी। तुम जो मांगोगे, वही तुम्हें मिल जाएगा। तुम कहोगे तो मैं तुम्हें अपनी मोती की माला दे दूंगी या सोने का अपना अच्छा-सा मुकुट दे दूंगी, जो मैं हर समय पहने रहती हूं।"

मेंढक ज़ोर से टर्राकर हंसा और बोला, "मुझे तुम्हारे इन इनामों की ज़रूरत नहीं है। भला, मैं तुम्हारी माला और मुकुट को लेकर क्या करूंगा! इसकी बजाय मैं तो चाहता हूं कि तुम यह वादा करो कि अगर मैं तुम्हारी गेंद निकाल दूं तो तुम मुझे अपना दोस्त बना लोगी। मुझे अपने साथ रहने दोगी और अपने साथ ही खेलने दोगी। मैं खाने की मेज़ पर भी तुम्हारे पास ही बैठूंगा और तुम्हारी थाली में ही खाना खाऊंगा। तुम्हारे गिलास से ही पानी पीऊंगा और तुम्हारे साथ ही रेशम के गद्दे पर एक तरफ मैं भी सोऊंगा।"

राजकुमारी ने थोड़ी देर सोचा और फिर बोली, "कोई बात नहीं, ठीक है। मुझे तुम्हारी बात मंज़ूर है। अब तुम जल्दी से मेरी सुनहरी गेंद निकाल लाओ।"

राजकुमारी ने सोचा कि यह मेंढक भला मेरे साथ कैसे रहेगा? कैसे यह मेरी थाली में खाना खाएगा और मेरे साथ बिस्तर पर सोएगा? यह तो पानी का जीव है। यह अपने हौले को छोड़कर कहीं नहीं जाएगा।

इतने में मेंढक ने पानी में डुबकी लगाई और थोड़ी ही देर में पानी में से सुनहरी गेंद निकाल लाया। फिर उसने गेंद को हौज़ के बाहर घास पर लुढ़का दिया।

राजकुमारी ने दौड़कर अपनी गेंद उठा ली। फिर उसने खुश होते हुए मेंढक को धन्यवाद दिया और जल्दी-जल्दी दौड़ती हुई अपने महल में चली आई। मेंढक उसके पीछे चिल्लाता रहा, "अरे रुको-रुको, राजकुमारी! तुमने मुझे अपने साथ ले जाने का

वादा किया है। मैं तुम्हारी तरह नहीं दौड़ सकता। ज़रा धीरे चलो।"

लेकिन राजकुमारी ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह भागती हुई महल में चली गई और थोड़ी ही देर में मेंढक के बारे में सब कुछ भूल गई।

दूसरे दिन जब राजकुमारी अपने पिता के साथ बैठकर खाना खा रही थी तो इतने में उसे कमरे के बाहर अजीब-सी आवाज़ सुनाई दी। लगा, जैसे कमरे के बाहर संगमरमर की सीढ़ियों पर कोई उछल-कूद कर रहा है। फिर किसीने दरवाज़ा थपथपाया और आवाज़ आई, "राजकुमारी, दरवाज़ा खोलो! टर्र-टर्र, राजकुमारी दरवाज़ा खोलो!"

राजकुमारी की समझ में नहीं आया कि कौन आवाज़ें लगा रहा है। महल का कोई भी नौकर-चाकर उसे इस तरह आवाज़ें नहीं लगा सकता था। उसने दरवाज़े से बाहर आकर देखा कि बड़ा-सा हरे रंग का मेंढक किसी तरह दरवाज़े के बिलकुल पास आ पहुंचा है। राजकुमारी ने तुरन्त पहचान लिया कि यह वही गंदा मेंढक है। उसने फौरन दरवाज़ा बन्द कर लिया। फिर अन्दर जाकर उसने राजा के पास बैठकर खाना शुरू कर दिया। लेकिन वह इतनी घबराई हुई थी कि राजा को कुछ संदेह हुआ। उसने पूछा, "तुम इस तरह घबरा क्यों रही हो? क्या बाहर कोई भूत बैठा है?"

राजकुमारी ने डरते-डरते जवाब दिया, "जी नहीं, बाहर एक गंदा-सा मेंढक बैठा है। यह वही मेंढक है, जो जंगल में नींबू के पेड़ के नीचे हौज़ में रहता है। इसने कल मेरी सुनहरी गेंद पानी से निकाली थी।"

राजा ने पूछा, "तो फिर वह यहां क्या करने आया है? मुझे तुम सारी बात सच-सच बताओ।"

इसपर राजकुमारी रोने लगी और उसने राजा को सारी बातें बता दीं। उसने बताया कि किस तरह उसने मेंढक से वादा



कर लिया था कि उसे वह हमेशा अपने साथ रखेगी। लेकिन यह सब उसने खेल-खेल में ही किया था। उसने कभी यह नहीं सोचा था कि पानी का एक मेंढक उसके साथ रहने के लिए आ जाएगा।

राजा को राजकुमारी की यह बात अच्छी नहीं लगी। उसने कहा, "तुम्हें अपने वचन का पालन करना चाहिए। राजकुमारी को अपना वादा कभी नहीं तोड़ना चाहिए। वरना प्रजा के लोग समझेंगे कि राजा की लड़की झूठ बोलती है और अपने वचन का पालन नहीं करती। तुम फौरन दरवाज़ा खोलो और उस मेंढक को अन्दर ले आओ।"

इतने में दरवाज़े के बाहर फिर थपथपाहट हुई और बाहर से मेंढक ने टर्राते हुए कहा, "टर्र-टर्र, राजकुमारी दरवाज़ा खोलो! अपना वादा याद करो। तुमने मुझे अपना दोस्त बनाने और महल में अपने साथ ही रखने का वादा किया था।"

राजकुमारी को मजबूर होकर दरवाज़ा खोलना पड़ा और मेंढक को अन्दर लेना पड़ा। वह मोटा मेंढक उछलता हुआ कमरे के अन्दर आ गया और फिर जाकर राजकुमारी की कुर्सी पर बैठ गया।

राजकुमारी को यह सब बड़ा अजीब-सा लगा। लेकिन कुर्सी पर बैठते ही मेंढक ने कहा, "ज़रा अपनी यह सोने की थाली इधर खिसकाओ, ताकि मैं भी आराम से खा सकूं। खाना उठाने में मुझे तकलीफ हो रही है। मेरा हाथ इतना लम्बा नहीं है।"

बेचारी राजकुमारी! अब वह कर ही क्या सकती थी। एक गंदे से मेंढक के साथ उसी थाली में खाना उसे बहुत बुरा लग रहा था। राजकुमारी उसे भगा भी नहीं सकती थी, क्योंकि उसे राजा का डर था। खाना खत्म करने के बाद मेंढक बोला, "अच्छा, अब मुझे उठाओ और अपने सोने के कमरे में पहुंचा दो। मैं तुम्हारे बिस्तरे पर एक किनारे पड़ा रहूंगा।"

इसपर राजकुमारी रोते-रोते बोली, "नहीं, यह मुझसे नहीं

होगा । मैं तुम्हें अपने बिस्तर में नहीं सुलाऊंगी । तुम्हारे हाथ-पैर गंदे हैं ।"

लेकिन राजा ने फिर से घूरकर उसकी ओर देखा और धीरे से उससे कहा, "तुम अपने वचन का पालन नहीं कर रही हो ।"

यह सुनते ही राजकुमारी उठी और मेंढक के साथ अपने कमरे की ओर जाने लगी । बाहर निकलने पर मेंढक उससे बोला, "मैं थक गया हूं । मुझे उठाकर ले चलो । मुझसे जीना चढ़ते नहीं बनेगा ।"

राजकुमारी ने एक उंगली और अंगूठे की चिमटी से उसको उठाते हुए कहा, "तुम बहुत ही गंदे मेंढक हो ! तुम्हें यहां आने की ज़रूरत नहीं थी । तुम्हारे जैसा भद्दा मेंढक मैंने आज तक नहीं देखा ।"

राजकुमारी इस तरह उसे चिमटी से उठाती हुई अपने से बहुत ही दूर रख रही थी जैसे वह कोई बहुत ही गंदी चीज़ हो । कमरे में लाकर उसने मेंढक को एक कोने में फेंक दिया और बोली, "जाओ, उस कोने में पड़े रहो । बहुत शोर करोगे तो मैं तुम्हें किसी बियाबान जंगल में फिकवा दूंगी ।"

इसके बाद राजकुमारी अपने बिस्तर पर चढ़ गई और रेशम की रज़ाई ओढ़कर सो गई । थोड़ी देर बाद मेंढक खिसकते हुए राजकुमारी के पलंग के पास आया और उसके सिर के पास ही एक तिपाई पर बैठ गया। वहां बैठे-बैठे फिर टर्राने लगा, "राजकुमारी, राजकुमारी, मैं थक गया हूं और मुझे ठंड भी लग रही है । मुझे अपने बिस्तर में आने दो ।"

राजकुमारी थोड़ी देर तक तो सुनती रही, फिर उसे गुस्सा आ गया । वह झल्लाकर उठी । उसने मेंढक को उठा लिया और उसे ज़ोर से ज़मीन पर पटकने ही जा रही थी कि उसे राजा की बातें याद हो आईं । राजा ने उससे कहा था कि राजकुमारी को अपने वचन का पालन करना चाहिए । इसलिए फिर उसने मेंढक को धीरे-से अपने बिस्तर में किनारे पर रख दिया और उसको

रज़ाई भी ओढ़ा दी।

लेकिन जैसे ही मेंढक बिस्तर पर पहुंचा, राजकुमारी को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह भद्दा-सा मेंढक न जाने कहां गायब हो गया था। उसकी जगह एक सुन्दर-सा राजकुमार बैठा हुआ उसकी ओर देख रहा था और मुस्करा रहा था।

राजकुमार बोला, "राजकुमारी, मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं। तुमने मुझपर बड़ी कृपा की है। मैं तुम्हारी बदौलत ही आज फिर से आदमी बन सका हूं। तुमने मुझे जादूगरनी के शाप से छुट्टी दिला दी।"

इसके बाद राजकुमार उसको अपनी कहानी सुनाने लगा, "मैं एक बड़े-से देश का राजकुमार हूं। मुझको एक जादूगरनी महल में से उठा लाई थी। उसने मुझे आदमी से मेंढक बना दिया था। फिर वह मुझे शाप देकर चली गई थी कि तुम तब तक मेंढक बने हुए ही हौज़ में पड़े रहोगे जब तक कि किसी राजा की बेटी तुम्हें अपना साथी बनाने के लिए राज़ी नहीं हो जाती और तुम को अपनी थाली में खाना नहीं खिलाती। तुमने मुझको अपनी थाली में खाना खिलाया, फिर तुम अपने साथ मुझे अपने कमरे में ले आईं और फिर मुझे अपने बिस्तर पर रख दिया। इस तरह जादूगरनी का जादू टूटा और मैं मेंढक से आदमी बन गया। अब मैं वापस अपने देश जाना चाहता हूं। अगर तुम राज़ी हो तो मैं तुमसे विवाह करूंगा और अपने देश ले जाकर वहां मैं तुमको अपनी रानी बना लूंगा।"

यह सब सुनकर राजकुमारी बड़ी खुश हुई। इतना सुन्दर राजकुमार उसने पहले कभी नहीं देखा था। वह दौड़ी-दौड़ी अपने पिता के पास गई। राजा को भी उसकी बात सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। जब राजा ने राजकुमार को देखा और उसकी कहानी सुनी तो वह खुशी-खुशी अपनी बेटी का विवाह उससे करने के लिए राज़ी हो गया।

कुछ दिनों बाद बड़ी धूमधाम के साथ राजकुमार और राज-

कुमारी का विवाह हो गया। राजकुमार राजकुमारी को साथ लेकर अपने देश वापस लौट गया। उसके देश के लोगों ने उसका बड़ा स्वागत किया। इसके बाद राजकुमार और राजकुमारी सुख से रहने लगे।

भाई-बहिन



एक घने जंगल के किनारे एक गरीब लकड़हारा रहता था। उसके दो बच्चे थे। लड़के का नाम था हांसेल और लड़की का नाम था ग्रेथेल। जब ये दोनों बच्चे छोटे थे तभी उनकी मां की मृत्यु हो गई। कुछ दिनों बाद लकड़हारे ने दूसरा विवाह कर लिया। लकड़हारा दिन-भर जंगल में जाकर लकड़ियां काटता था और फिर शाम को जाकर उन्हें बेचता था। इस तरह जो कुछ दो-चार पैसे मिल जाते थे, उन्हीं से वह अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। सब लोग एक टूटी-फूटी झोंपड़ी में रहते थे। जब लकड़हारा लकड़ी काटने चला जाता था तो हांसेल और

ग्रेथेल की सौतेली मां उन्हें बड़ा दुःख देती थी। वह चाहती थी कि ये दोनों बच्चे किसी तरह यहां से चले जाएं तो बड़ा अच्छा हो।

जाड़े के दिन थे। लकड़हारे का काम बड़ी मुश्किल से चल रहा था। वह दिन-भर में इतनी लकड़ियां नहीं बटोर पाता था कि किसी तरह सब लोगों के खाने-भर का खर्चा चल पाता। एक दिन उसकी बीवी ने रात में उससे कहा, "हम लोगों के घर में इतना खाना नहीं है कि दो आदमी भी पेट भरकर खा सकें। तुम इन दोनों बच्चों को कहीं छोड़ आओ। मैं तो चाहती हूं कि तुम इनको घने जंगल में कहीं ऐसी जगह छोड़ो कि ये फिर लौटकर घर वापस न आ सकें।"

लकड़हारा बोला, "नहीं, नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है! यह बच्चे छोटे हैं। इनको मैं जंगल में भूखा मरने के लिए कैसे छोड़ सकता हूं? जंगल के जंगली जानवर इन्हें खा जाएंगे।"

इसपर उसकी बीवी ने निराश होकर कहा, "तो ठीक है। इन्हें अपने साथ रखो और सब लोग भूखों मरो। खाने के लिए तो हमारे घर में है ही नहीं। वैसे भी तुम्हारे ये बच्चे तुम्हारे साथ रहते हुए भी भूखों मर जाएंगे। अगर तुम इन्हें कहीं जंगल में छोड़ आओगे, तो हो सकता है इनका भाग्य इनका साथ दे और भटकते हुए कहीं ऐसी जगह पहुंच जाएं जहां इन्हें भूखा न मरना पड़े।"

इस प्रकार उस दुष्ट स्त्री ने अपने आदमी को बहुत बहकाने की कोशिश की। अन्त में हारकर लकड़हारे को अपनी बीवी की बात माननी पड़ी। वह बोला, "ठीक है। कल ही हम लोग दोनों बच्चों को जंगल में छोड़ आएंगे।"

लकड़हारा जब अपनी बीवी से इस तरह बातें कर रहा था तो उधर दोनों बच्चे बिस्तर में चुप पड़े सुन रहे थे। अभी उन्हें नींद नहीं आई थी। जब उन्होंने सुना कि उनका पिता और उनकी सौतेली मां उनके बारे में कुछ बात कर रहे हैं तो वे कान लगाकर

सुनने लगे।

सारी बात सुनकर दोनों बच्चे बहुत घबराए। ग्रेथेल छोटी थी। वह रोने लगी और अपने भाई से कहने लगी, "ये लोग हमें कल जंगल में छोड़ने जाएंगे। वहां जंगली जानवर हमें खा जाएंगे।"

डर तो हांसेल को भी लग रहा था लेकिन वह बड़ा और समझदार था। उसने अपनी बहिन को समझाते हुए कहा, "डरो मत! मैं तुम्हारे साथ ही रहूंगा। हम लोग कोई न कोई रास्ता ढूढ़ लेंगे। मुझे एक बात सूझ रही है। तुम चुपचाप बिस्तर में लेटी रहो। मैं अभी ज़रा बाहर होकर आता हूं।"

यह कहकर हांसेल चुपचाप उठा और अपने पिता और सौतेली मां की नज़र बचाकर झोंपड़ी से बाहर निकल आया। बाहर आकर उसने देखा कि आकाश में चांद निकला हुआ था और चांदनी में पास ही बहने वाले नाले के किनारे पड़े छोटे-छोटे कंकड़ चमक रहे थे। हांसेल ने बहुत-से कंकड़ उठाकर अपनी जेबों में भर लिए और फिर झोंपड़ी में जाकर चुपचाप सो गया।

दूसरे दिन सौतेली मां ने दोनों बच्चों को बहुत जल्दी जगा दिया और थोड़ी ही देर में हाथ-मुंह धुलाकर उन्हें तैयार कर दिया। फिर वह बोली, "चलो आज हम सब लोग जंगल में चलेंगे। वहां तुम्हारे पिताजी लकड़ी काटेंगे और हम लोग उनकी मदद करेंगे।"

उसने दोनों बच्चों को खाने के लिए मोटी-मोटी रोटियां दीं और फिर सब लोग रवाना हो गए।

रास्ते में लकड़हारे ने देखा कि हांसेल चलते-चलते थोड़ी दूर जाकर रुकता था और फिर पीछे की ओर देखने लगता था। वह बोला, "सामने देखकर चलो, हांसेल! पीछे क्या देख रहे हो? तुम्हें ठोकर लग जाएगी।"

हांसेल बोला, "मैं पीछे मुड़कर अपनी बिल्ली को देख रहा हूं। वह झोंपड़ी के छप्पर पर बैठी है और हम लोगों को देख

रही है।"

लेकिन सच बात यह थी कि हांसेल किसी बिल्ली को नहीं देख रहा था बल्कि वह रास्ते में पत्थर गिराता चलता था और इस तरह वापस लौटने के लिए निशान बनाता चल रहा था।

चलते-चलते सब लोग जंगल के बीच घने भाग में जा पहुंचे। वहां जाकर लकड़हारे ने कुछ लकड़ियां बटोरीं और उनका अलाव जलाकर बच्चों से कहा, "तुम लोग यहां बैठकर आग तापो। मैं अभी लकड़ी काटकर आता हूं। तुम्हारी मां भी मेरे साथ जाएगी।"

दोनों बच्चे आग के पास बैठ गए। चारों तरफ घना जंगल था। दूर तक घनी झाड़ियों और पेड़ों के अलावा और कुछ भी नज़र नहीं आता था। दूर पर कहीं खट-खट की आवाज़ आ रही थी, जिससे उन्होंने समझा कि उनका पिता लकड़ी काट रहा है। लेकिन वास्तव में लकड़हारा तो वहां से बहुत दूर जा चुका था। यह खट-खट की आवाज़ हवा में एक सूखी डाल के हिलने के कारण हो रही थी। धीरे-धीरे रात हो गई। लकड़हारा लौटकर नहीं आया। बच्चे वहां आग के पास थककर सो गए।

कुछ देर बाद रात में जब नींद खुली तो उन्हें बड़ा डर लगने लगा। चारों तरफ अंधेरा फैला हुआ था। पेड़ के ऊपर उल्लू बोल रहे थे और दूर कहीं सियार 'हुआ-हुआ' कर रहे थे। ग्रेथेल ने सिसकते हुए कहा, "भैया, हम लोग तो अब घने जंगल में खो जाएंगे और कभी भी लौटकर घर नहीं जा सकेंगे।"

हांसेल बोला, "घबराओ मत! अभी चांद निकलेगा और फिर हम लोग घर के लिए चल पड़ेंगे। तुम मेरा हाथ पकड़ लेना। मैं तुम्हें आराम से घर पहुंचा दूंगा।"

थोड़ी देर बाद चांद निकला। जंगल में चांदनी फैल गई। अंधेरा कुछ कम हुआ। हांसेल अपनी बहिन का हाथ पकड़कर उसे घर की ओर ले चला। रास्ता ढूंढ़ने में उसे कोई कठिनाई नहीं हो रही थी, क्योंकि उसने रास्ते में जो कंकड़ गिराए थे वे

चांदनी में चमक रहे थे, इस तरह धीरे-धीरे रास्ता खोजते हुए दोनों बच्चे झोंपड़ी के पास जा पहुंचे।

उनको देखकर उनकी सौतेली मां ने चीखकर कहा, "तुम दोनों बहुत बुरे बच्चे हो! तुम कहां रह गए थे। हमने तो जंगल में तुमको बहुत खोजा। तुम लोग मिले ही नहीं। इतनी-इतनी देर तक घर से बाहर रहते हो!"

लेकिन लकड़हारे को अपने बच्चों पर दया आ गई। उसने आगे बढ़कर उनको अपनी गोद में लिया और बड़े प्यार के साथ झोंपड़ी में ले जाकर खाना खिलाया।

कुछ दिन इसी तरह से बीते। लकड़हारे की आमदनी बहुत थोड़ी थी, इसलिए सब लोगों को आधा पेट खाना ही मिलता था। अन्त में एक दिन फिर लकड़हारे की बीवी ने ज़िद की कि दोनों बच्चों को जंगल में छोड़ दिया जाए। लकड़हारे ने पहले तो उसकी बात नहीं मानी, लेकिन फिर उसे राज़ी होना पड़ा। दूसरे दिन तैयार होकर सब जंगल की ओर चल पड़े।

इस बार हांसेल रास्ते में कंकड़ गिराने की बजाय उन रोटियों के टुकड़े फेंकता चल रहा था जो उसकी सौतेली मां ने उसे खाने के लिए दी थीं। ग्रेथेल की रोटी उसकी झोली में थी। हांसेल ने अपनी पूरी रोटी इस तरह टुकड़े-टुकड़े करके रास्ते में डाल दी। इस बार लकड़हारा उन लोगों को बहुत ही घने जंगल में ले गया।

उस दिन भी पहले की तरह लकड़हारा आग जलाकर दोनों बच्चों को उसके पास छोड़ आया। दोनों बच्चे काफी देर तक अपने पिता की राह देखते रहे और अन्त में थककर वहां सो गए। रात में जब उनकी नींद खुली तो ग्रेथेल डर के मारे रोने लगी। किसी तरह हांसेल ने उसको समझाया और कहा, "डरो मत! इस बार भी हम लोग आसानी से घर पहुंच जाएंगे। मैं रास्ते भर रोटी के टुकड़े गिराता आया हूं। उनको देखते हुए हम लोग घर पहुंच जाएंगे।"

लेकिन इस बार ऐसा नहीं हुआ। हांसेल ने रोटी के जो टुकड़े रास्ते में गिराए थे, उनको चिड़ियां खा गई थीं। एक भी टुकड़ा बाकी नहीं बचा था। दोनों भाई-बहिन जंगल में भटकते फिरे, लेकिन उन्हें रास्ता नहीं मिला। भटकते-भटकते वे और भी घने जंगल में पहुंच गए। इस तरह भटकते हुए तीन दिन बीत गए। भूख लगने पर वे जंगली फल खाकर अपना पेट भरते थे और रात में कहीं पेड़ के नीचे या किसी गुफा में सो जाते थे। सुबह होने पर वे फिर चल पड़ते थे।

एक दिन जब वे लोग इस तरह चले जा रहे थे तो उन्होंने पेड़ की डाल पर एक बहुत सुन्दर सफेद चिड़िया बैठी हुई देखी। चिड़िया बड़ी मीठी आवाज़ में गा रही थी। दोनों बच्चे रुककर उसका गाना सुनने लगे। अचानक चिड़िया पंख फड़फड़ाकर उड़ चली। वह उड़ती हुई और भी सुन्दर लग रही थी। दोनों बच्चे खेल-खेल में उसके पीछे भागने लगे। ऐसा लगता था कि जैसे चिड़िया भी उनके साथ खेल रही हो। वह भी धीरे-धीरे उड़ती थी और बच्चों से आगे निकलकर किसी पेड़ की डाली पर बैठ जाती थी। जब बच्चे भागते हुए उसके पास आते थे तो वह उड़-कर आगे निकल जाती थी। अन्त में चिड़िया जंगल के ठीक बीच में बनी एक छोटी-सी कुटिया के ऊपर जाकर बैठ गई।

बच्चे दौड़ते हुए जब वहां पहुंचे तो जंगल में ऐसी सुन्दर कुटिया देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। पास आकर उन्होंने देखा कि वह पूरी कुटिया तरह-तरह की मिठाइयों, मिठाई की गोलियों, मिश्री वगैरा खाने की चीज़ों की बनी हुई थी। दीवारें बर्फी की बनी थीं। छत लड्डू और पेड़े से बनी थी। खिड़की में जलेबियां लटक रही थीं। दरवाज़े के सामने सीढ़ियां मिश्री की बनी थीं। दोनों बच्चे खुशी-खुशी मिठाई तोड़कर खाने लगे।

थोड़ी ही देर में कुटिया का दरवाज़ा खुला और उसमें से एक बहुत बूढ़ी स्त्री लाठी के सहारे चलती हुई बाहर निकल आई। उसे देखकर दोनों बच्चे डरकर थर-थर कांपने लगे। उनके हाथ



से मिठाई छूटकर ज़मीन पर आ गिरी। बुढ़िया बोली, "बच्चो, डरो मत! तुम खूब पेट-भर मिठाई खाओ, लेकिन मेरे घर को मत तोड़ो। अन्दर आओ। मैं तुमको तरह-तरह की मिठाइयां दूंगी।"

दोनों बच्चे बुढ़िया के साथ कुटिया के अन्दर चले गए। वहां बुढ़िया ने उनको बहुत अच्छा खाना खिलाया। कई दिनों से दोनों बच्चों को खाने के लिए कुछ नहीं मिला था। इसीलिए दोनों ने भरपेट खाना खाया। इसके बाद उस बुढ़िया ने दो छोटे-छोटे पलंगों पर उनके लिए बिस्तर लगा दिए। बच्चे थके हुए थे। थोड़ी ही देर में गहरी नींद में सो गए।

यह बुढ़िया असल में एक दुष्ट जादूगरनी थी। वह छोटे बच्चों को बहकाकर उन्हें पकड़ लेती थी और फिर मौका देखकर उन्हें खा जाती थी। उसकी आंखें बहुत कमज़ोर थीं। वह दूर की चीज़ें नहीं देख पाती थी लेकिन उसकी नाक बहुत तेज़ थी और सूंघकर बहुत-सी बातों का पता लगा लेती थी। उसे मालूम हो गया था कि हांसेल और ग्रेथेल जंगल में भटक रहे हैं। किसी तरह उनको पकड़ने के लिए ही उसने मिठाई की इस कुटिया का नाटक रचा था।

दूसरे दिन सुबह वह बुढ़िया उन बच्चों को देखने के लिए गई। दोनों बच्चे आराम से अपने-अपने बिस्तर में सो रहे थे। उसे यह देखकर बड़ी खुशी हो रही थी कि एक साथ दो बच्चे उसके जाल में फंस गए हैं।

उसने अपने मन में कहा, "अगर ये बच्चे मोटे-ताज़े होते तो ज़्यादा अच्छा होता। ये बड़े दुबले-पतले हैं, लेकिन चलो खैर! फिर उसने हांसेल को चुपके से उठाया और उसे एक लोहे के पिंजरे में बन्द कर दिया। हांसेल सोता ही रहा। उसे पता न चला कि क्या हुआ।

इसके बाद वह ग्रेथेल के पास पहुंची और उसे झकझोरकर

जगाते हुए बोली, "उठ आलसी लड़की, उठ! जल्दी उठ और ज़रा काम कर। चल पहले चूल्हा जला और इसके बाद पानी गरम कर। फिर जल्दी नाश्ता तैयार करने में मेरी मदद कर। मैंने तुम्हारे भाई को पिंजरे में बन्द कर दिया है। मैं खिला-पिलाकर उसे मोटा करूंगी और उसके बाद उसको खाऊंगी।"

ग्रेथेल बेचारी यह सुनकर हक्का-बक्का रह गई। बड़ी मुश्किल से आंखें मलते हुए वह उठी। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। बुढ़िया उसे धक्का देते हुए रसोईघर में ले गई और उसे काम में लगा दिया। ग्रेथेल रोते हुए काम करने लगी।

इसके बाद बुढ़िया ने तरह-तरह की खाने की चीज़ें तैयार कीं। उसने पिंजरे में बन्द हांसेल को अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने के लिए दीं; हलवा-पूड़ी, दूध-मलाई, वग़ैरा। लेकिन ग्रेथेल को रूखी-सूखी और बासी रोटियां और बची-खुची चीज़ें खाने के लिए दीं।

इस तरह रोज़ चलने लगा। हर रोज़ बुढ़िया पिंजरे के पास जाती थी और हांसेल को बढ़िया खाना खिलाने के बाद उससे कहती थी, "लड़के, ज़रा अपनी उंगली दिखाओ। मैं देखना चाहती हूं कि तुम बढ़िया माल खाकर कितने मोटे हो गए हो।"

लेकिन हांसेल बड़ा चालाक था। उसे बुढ़िया की सारी चाल का पता था। उसे यह भी मालूम हो गया था कि बुढ़िया को आंखों से साफ-साफ दिखाई नहीं देता है, इसलिए वह अपनी उंगली दिखाने की जगह खाने-पीने की कोई चीज़ दिखा देता था और उससे बुढ़िया समझती थी कि लड़का रोज़ मोटा होता जा रहा है। लेकिन इतने पर भी वह भुनभुनाती रहती थी, "मैं तुम्हें खाने के लिए इतनी बढ़िया चीज़ें देती हूं, फिर भी तुम बहुत धीरे-धीरे मोटे हो रहे हो!"

अन्त में एक दिन बुढ़िया बोली, "भई, अब मुझसे ज़्यादा इन्तज़ार नहीं किया जाता। लड़की, तुम कल सुबह ज़रा जल्दी

उठना और झटपट सारा काम निपटा लेना। मैं कल तुम्हारे भाई को उबालकर खाऊंगी !"

यह सुनकर ग्रेथेल फूट-फूटकर रोने लगी और बोली, "इससे तो अच्छा यही होता कि हम लोग जंगल में ही भटकते फिरते और कोई जंगली जानवर हमें खा जाता।"

बुढ़िया ने उसे डांटते हुए कहा, "चुप रहो ! बकवास मत करो। तुम्हारे चाहने न चाहने से कुछ नहीं होगा, और इस तरह आंसू बहाना बन्द करो।"

दूसरे दिन सुबह ग्रेथेल को मन मारकर बुढ़िया की आज्ञा का पालन करना पड़ा। वह सुबह जल्दी उठी और चूल्हा जलाने के बाद उसने एक बड़े भारी बर्तन में पानी उबलने के लिए रख दिया। इसके बाद बुढ़िया ने उसे हुक्म दिया, "जाओ, जल्दी से आटा सानो और रोटी बनाने की तैयारी करो।"

जब ग्रेथेल ने आटा गूंथ दिया तो बुढ़िया ने उससे कहा, "अच्छा, अब ज़रा इस चूल्हे के अन्दर घुसकर देखो कि यह अच्छी तरह गरम हो गया है या नहीं।"

बुढ़िया ने यह अपना चूल्हा बहुत बड़ा बना रखा था। ग्रेथेल समझ गई कि बुढ़िया क्या चाहती है। उसने सोचा कि यह मुझे चूल्हे के अन्दर ही बन्द कर देगी और इस तरह पहले मुझे ही भून डालेगी। उसने बुढ़िया से कहा, "चूल्हे का मुंह बहुत छोटा है। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं इसमें किस तरह से जाऊं।"

बुढ़िया ने चिल्लाकर कहा, "क्या ? कितनी बेवकूफ हो तुम ! तुम्हें पता नहीं, चूल्हे के अन्दर किस तरह घुसा जा सकता है ? देखो यह तो इतना बड़ा है।" यह कहकर उसने अपना सिर चूल्हे के अन्दर डालकर दिखाया।

ग्रेथेल ने फौरन पीछे मुड़कर बुढ़िया को ज़ोर का धक्का दिया। वह पूरी की पूरी चूल्हे के अन्दर जा गिरी। बाहर से ग्रेथेल ने चूल्हे का मुंह बन्द कर दिया। इसके बाद उसने हांसेल के पिंजरे का ताला खोला और फिर वह दौड़ती हुई उसके पास पहुंची। उसने

अपने भाई को पिंजरे से बाहर निकाल लिया और बताया कि किस तरह वह बुढ़िया को जलते हुए चूल्हे में झोंक आई है! हांसेल उस पिंजरे से बाहर आकर बहुत खुश हुआ।

इसके बाद दोनों भाई-बहिनों ने बुढ़िया की कुटिया में खूब लूट मचाई। बुढ़िया ने तरह-तरह के हीरे-मोती के जेवर और बहुत-सी कीमती चीज़ें जमा कर रखी थीं। दोनों बच्चों ने अपनी जेबें हीरे-मोतियों से भर लीं। इसके बाद दोनों वहां से भाग निकले।

दोनों इतनी तेज़ी से भागे कि थोड़ी ही देर में बहुत दूर निकल आए। आगे चलने पर उन्हें एक बहुत बड़ी झील मिली। यह झील इतनी बड़ी थी कि बिना नाव में बै` इसे पार करना संभव नहीं था। हांसेल बोला, "अब क्या किया जाए? इस झील पर तो कोई पुल नहीं है, और न आसपास कोई नाव ही दिखाई दे रही है। हम लोग इसको पार कैसे करेंगे!"

ग्रेथेल बोली, "देखो, देखो! उधर वह एक बड़ी-सी सफेद बत्तख तैर रही है। चलो हम उसके पास चलें। वह हमारी मदद करेगी।"

बत्तख के पास पहुंचकर ग्रेथेल ने गाना शुरू किया। थोड़ी ही देर में बत्तख तैरती हुई उनके पास आ गई और उन दोनों को झील के पार ले जाने के लिए राज़ी हो गई। बत्तख ने पहले हांसेल को अपनी पीठ पर बिठाया और झील के पार उतार दिया। इसके बाद उसने ग्रेथेल को भी इसी तरह दूसरे किनारे पर पहुंचा दिया।

झील के दूसरे किनारे पर पहुंचने पर दोनों बच्चों की खुशी की सीमा न रही। उन्हें यह समझते देर नहीं लगी कि जंगल का यह भाग तो उनका बहुत जाना-पहचाना था। उन्होंने जल्दी-जल्दी घर की तरफ चलना शुरू किया। थोड़ी देर में उन्हें अपने घर का रास्ता मिल गया और वे अपनी झोंपड़ी के पास जा पहुंचे।

उन्होंने एक पेड़ की ओट से देखा कि उनका पिता एक कोने में बैठा लकड़ी चीर रहा था। वह बहुत दुःखी मालूम होता था। जैसे ही बच्चे लकड़हारे के पास पहुंचे उसने दौड़कर उन्हें गले से लगा लिया। वह बोला, "आओ बच्चो, जिस दिन से मैंने तुम लोगों को जंगल में छोड़ा है, उस दिन से आज तक मुझे चैन नहीं मिला। मैं हमेशा तुम्हारी याद में रोता रहता हूं। अब किसी तरह भगवान की दया से तुम लोग घर लौट आए हो। अब मैं हमेशा तुम्हें अपने साथ रखूंगा और तुम्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं होने दूंगा।"

दोनों बच्चे भी अपन पिता से मिलकर बहुत खुश हुए। फिर उन्होंने जंगल की उस बुढ़िया जादूगरनी की बात बताई और अपनी जेबों से निकालकर तरह-तरह के हीरे-मोती और दूसरी कीमती चीज़ों का ढेर अपने पिता के सामने लगा दिया। लकड़हारे को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। इतना सारा धन तो उसने कभी सपने में भी नहीं देखा था। इतना धन पाकर उनकी सौतेली मां भी बड़ी खुश हुई। इस तरह उन लोगों की गरीबी दूर हो गई। हांसेल और ग्रेथेल हीरे-मोती से खेलने लगे। लेकिन अब भी उन्हें हीरे-मोती और जवाहरातों से भी ज़्यादा सुन्दर नाले के किनारे के वे पत्थर लगते थे जिनसे वे बचपन से खेलते आए थे।

चालाक गधा



एक गधा था। बहुत दिनों तक अपने मालिक की सेवा करने के बाद अब बूढ़ा हो गया था। गधे से अब ज़्यादा काम करते नहीं बनता था। थोड़ी देर में वह हांफने लगता था। एक दिन मालिक उससे इतना तंग आ गया कि बड़बड़ाते हुए बोला, "मैं तुम्हें कल मार डालूंगा और तुम्हारा चमड़ा बेच दूंगा।"

यह सुनकर गधा बड़ा दुःखी हुआ। रात-भर उसे नींद नहीं आई। अन्त में सवेरा होने से पहले ही वह घर से निकल गया। चलते-चलते वह सड़क पर पहुंच गया। यह सड़क एक दूसरे शहर को जाती थी, जिसमें कुछ बाजेवाले रहते थे। गधे ने सोचा, चलो मैं बाजेवालों के पास चलकर देखूं, शायद वे लोग मुझे अपने साथ रख लें।

बूढ़ा गधा लड़खड़ाता हुआ चला जा रहा था। कुछ दूर चलने पर उसे सड़क के किनारे एक बूढ़ा कुत्ता बैठा हुआ मिला। कुत्ता जीभ निकालकर हांफ रहा था। गधे ने उससे पूछा, "कहो भाई, क्या हाल है? तुम इस तरह हांफ क्यों रहे हो?"

कुत्ता बोला, "भाई, और क्या करूं। देखते नहीं हो, मैं कितना बूढ़ा हो गया हूं। अब मैं अपने मालिक के लिए बेकार हो गया हूं। मालिक अब मुझे खाना नहीं देता है और चाहता है कि किसी तरह मैं मर जाऊं। इसीलिए मैं उससे बचकर यहां आ गया हूं।"

गधे ने कहा, "भई, यही तो मेरी भी मुसीबत है। मेरा मालिक भी मुझे मारना चाहता है, इसलिए मैं घर से भाग आया

हूं और अब शहर की ओर जा रहा हूं। वहां कुछ बाजेवाले रहते हैं। मैं उनसे बात करूंगा। अगर वे लोग राज़ी हो जाएंगे तो मैं उनका ढोल अपनी पीठ पर ढोया करूंगा। चाहो तो तुम भी मेरे साथ चलो। हो सकता है, तुम्हारे लिए भी कोई काम निकल आए।"

कुत्ता राज़ी हो गया और उसके साथ चल पड़ा। जब दोनों कुछ आगे बढ़े तो उन्हें एक बूढ़ी बिल्ली मिली। वह अपने पैरों पर मुंह रखे चुपचाप बैठी आंखें झपक रही थी। जब गधे ने उससे हाल-चाल पूछा तो वह बोली, "कुछ मत पूछो, भैया! अब मैं बूढ़ी हो गई हूं। मेरी मालकिन अब मुझे प्यार नहीं करती। वह मुझे नदी में डुबाना चाहती है, इसलिए मैं भागकर सड़क के किनारे आ बैठी हूं।"

गधा बोला, "तो आओ चलो, तुम भी हमारे साथ चली चलो। हम लोग बाजेवालों के पास जा रहे हैं। मैं उनका ढोल ढोया करूंगा और अगर वे लोग राज़ी हो गए तो ढोल बजा भी दूंगा। कुत्ता बिगुल बजा सकता है और तुम अपने गाने के लिए मशहूर हो ही। हम तीनों की मंडली बहुत अच्छी रहेगी।"

बूढ़ी बिल्ली खुशी-खुशी उन लोगों के साथ हो गई। कुछ दूर आगे चलने पर उन्हें एक मकान के दरवाज़े पर एक मुर्गा मिला। मुर्गा बार-बार 'कुकड़ू-कूं' की आवाज़ लगाता था और दौड़कर कभी दीवार पर चढ़ता था तो कभी घर के सामने के खम्भे पर बैठता था और कभी बीच सड़क में आकर खड़ा हो जाता था। उसको इस तरह बेचैन देखकर गधे ने उसका हाल-चाल पूछा और कहा, "क्यों भई, तुम इतनी ज़ोर-ज़ोर से क्यों चिल्ला रहे हो?"

मुर्गा बोला, "क्यों, मैं क्यों न चिल्लाऊं? तुम्हें पता है, मैं रोज़ बांग लगाकर अपने मालिक को जगाता हूं। मेरी आवाज़ सुनकर ही उसे पता चलता है कि अब सवेरा होने वाला है। अब मैं बूढ़ा हो गया हूं तो मेरी मालकिन मुझे मारकर और पकाकर

खाना चाहती है। इसीलिए मैं ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा हूं। मैं जब तक ज़िन्दा रहूंगा, तब तक इसी तरह चिल्लाता रहूंगा।"

गधे ने कहा, "अरे भाई, तुम चाहो तो तुम्हारी जान बच सकती है। तुम हमारे साथ शहर चले चलो। हम लोग बाजेवालों की मंडली में भरती होने जा रहे हैं। तुम्हें भी वहां कोई काम मिल जाएगा।"

मुर्गा खुशी-खुशी उनके साथ हो लिया। रास्ते-भर वह खूब बांग लगाता रहा। चलते-चलते रात हो गई। जब गधा अपने साथियों को लेकर शहर के पास पहुंचा तो इतना अंधेरा बढ़ गया कि उन्होंने रात को शहर के बाहर ही रहने का निश्चय किया। वे लोग रात बिताने के लिए कोई जगह ढूंढ़ने लगे।

चलते-चलते वे एक पेड़ के नीचे पहुंचे। गधा और कुत्ता पेड़ के नीचे ही डेरा डालकर बैठ गए लेकिन बिल्ली और मुर्गे ने पेड़ पर चढ़कर रात बिताने की सोची। बिल्ली तो पेड़ की एक डाल पर जमकर बैठ गई, लेकिन मुर्गा फुदकता हुआ सबसे ऊंची डाल पर जा बैठा। वहां से उसने चारों तरफ नज़र दौड़ाई। अचानक उसे कुछ दूर पर ही एक छोटा-सा मकान दिखाई दिया। वह बोला, "अरे भाई, सुनो, हम लोगों को रात इस तरह खुले में नहीं बितानी चाहिए। पास ही एक घर दिखाई दे रहा है। वहां चले चलो। जाड़े के दिन हैं। यहां खुले में तो हम लोग ठिठुरकर मर जाएंगे।"

सब लोगों को उसकी बात पसन्द आई। सब लोग किसी तरह गिरते-पड़ते उस मकान के पास जा पहुंचे। पास जाने पर उन्होंने देखा कि एक खिड़की खुली हुई है और अन्दर रोशनी हो रही है। गधा उनमें सबसे ऊंचा था। उसने गर्दन उठाकर खिड़की के अन्दर झांका।

"क्यों, तुम्हें अन्दर क्या दिखाई दे रहा है?" कुत्ते, बिल्ली और मुर्गे ने उससे पूछा।

गधा बोला, "अरे, धीरे बोलो, धीरे! अन्दर तो खाने की

एक मेज़ सजी हुई है और कुछ डाकू बैठे दावत उड़ा रहे हैं।" यह सुनकर सबके मुंह में पानी आ गया। उन्होंने सोचा, हमें किसी न किसी तरह अन्दर पहुंचना चाहिए। सबने मिलकर इसके लिए कोई उपाय सोचना शुरू किया। अन्त में उन्हें एक तरीका समझ में आ गया।

गधा जमकर खड़ा हो गया। उसकी पीठ पर कुत्ता चढ़ गया और फिर कुत्ते ने बिल्ली को अपनी पीठ पर चढ़ा लिया और अन्त में मुर्गा फुदकता हुआ बिल्ली की पीठ पर सवार हो गया। इस तरह पूरी तैयारी करने के बाद जैसे ही चांद निकलने को हुआ, सबने एक साथ अपने-अपने स्वर में चिल्लाना शुरू किया और चिल्लाते-चिल्लाते सब लोग एक साथ खिड़की के रास्ते कमरे में कूद पड़े।

अन्दर जो डाकू लोग दावत उड़ा रहे थे, वे घबराकर इधर-उधर भागने लगे। उन्होंने कभी भी ऐसा दृश्य नहीं देखा था। उन्होंने सोचा कि शायद कुछ भूत-प्रेत मकान में घुस आए हैं। थोड़ी ही देर में जिस डाकू को जिधर रास्ता मिला, वह उधर ही भाग खड़ा हुआ।

अब मकान पर इस नई घुमक्कड़ मंडली का राज हो गया। पहले तो सबने खूब छककर खाना खाया। इसके बाद दीया बुझाकर सब सोने की तैयारी करने लगे। मकान में जिसको जो जगह पसन्द आई, उसने वहां अपने पैर पसार दिए। गधा बाहर सहन में घास के ढेर पर आराम से लेट गया। कुत्ता दरवाज़े के पास ही अपनी पूंछ पर नाक रखकर ऊंघने की तैयारी करने लगा। बिल्ली ने चूल्हे के पास डेरा डाला और मुर्गा दरवाज़े पर जमकर बैठ गया।

उधर डाकू पहले तो घबराकर भाग निकले लेकिन कुछ दूर चलकर सब इकट्ठे हुए तो एक पेड़ के नीचे सुस्ताने लगे। कुछ देर बाद उन्होंने देखा कि उनके मकान में अंधेरा हो गया है। अब वे लोग कुछ हिम्मत बांधने लगे। उनमें से जो अपने को सबसे



ज़्यादा बहादुर समझता था उसने कहा, "चलो, ज़रा चलकर देखा जाए। सचमुच वे भूत-प्रेत ही थे या कोई और बात थी। इस तरह हमें अपने मकान को छोड़कर भागना नहीं चाहिए।"

दूसरे डाकुओं को भी उसकी बात समझ में आ गई। सब लोग घर के पास पहुंचे। डाकुओं के सरदार ने सबसे पहले घर में घुसकर देखने का निश्चय किया। दूसरे डाकुओं को बाहर छोड़कर ही वह खिड़की की राह से अन्दर कूद गया।

उसके अन्दर कूदते ही गधे के सभी साथी चौकन्ने हो गए। डाकू दीया जलाने के ख्याल से चूल्हे के पास आग लेने के लिए पहुंचा। वहां बिल्ली बैठी हुई थी और उसकी आंखें चमक रही थीं। डाकू ने उसकी आंखों को अंगारे मानकर उन्हें कुरेदने की कोशिश की। बिल्ली को उसकी यह हरकत पसन्द नहीं आई। उसने झपट्टा मारकर अपने पंजे से उसका मुंह नोच लिया।

डाकू घबराकर भागा। जब वह दरवाज़े के पास पहुंचा तो कुत्ते ने उछलकर उसके पैर में ज़ोर से काट लिया। डाकू हड़बड़ाकर इधर-उधर भागने लगा तो पीछे से गधे ने उसे एक दुलत्ती जमा दी। मुर्गा अपनी जगह ही बैठा रहा और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता रहा, "कुकड़ कूं, पकड़ लो इसे!"

मारे डर के डाकू की हालत खराब हो रही थी। ऊपर से जब उसे दुलत्ती पड़ी तो उसके मुंह से चीख निकल गई और वह गिरता-पड़ता भागता हुआ घर से बाहर निकल आया। बाहर आकर उसने अपने साथियों को बताया, "भागो भई, भागो यहां से! इस मकान में तो बहुत-से भूत जमा हैं। एक भूत चूल्हे के पास बैठा था। उसने मेरा मुंह नोच लिया। किसी तरह मेरी आंखें बच गईं, वरना मैं अंधा ही हो जाता। फिर दरवाज़े के पास कोई छुरा लेकर बैठा था। उसने कसकर मेरे पैर पर वार किया इतने में पीछे से किसीने मुझे बहुत ज़ोर से धक्का दिया और मेरी कमर ही तोड़ दी। जब वे सब लोग मेरी गत बना रहे थे तब एक प्रेत दरवाज़े के ऊपर बैठा बराबर चिल्लाए जा रहा था—पकड़

लो इसे, पकड़ लो इसे !"

यह सुनकर सभी डाकू वहां से भाग खड़े हुए। इसके बाद कभी भी किसी डाकू ने उस मकान के पास जाने की हिम्मत नहीं की। गधे की घुमक्कड़ मंडली सदा के लिए आराम के साथ वहीं बस गई।



राजकुमारी और सात बौने

यह एक ठंडे देश की कहानी है, जहां जाड़े के दिनों में खूब बर्फ गिरती थी। चारों तरफ बर्फ ही बर्फ नज़र आती थी। वहां एक राजा का राज था। उसका राजमहल एक बड़े भारी पुराने किले में था। उसकी रानी बहुत सुन्दर थी। लेकिन उसके कोई बच्चा नहीं था। रानी दिन-भर महल की खिड़की में बैठी रहती थी और वक्त काटने के लिए सिलाई-बुनाई का काम करती रहती थी।

जब जाड़े के दिन आते थे तो रानी का मन बड़ा उदास हो जाता था। मैदान, पेड़-पौधे सब बर्फ के कारण सफेद ही सफेद नज़र आते थे। बाहर देखने के लिए कुछ भी नहीं होता था। रानी अपनी खिड़की में उदास बैठी रहती थी और खिड़की पर जमने वाली बर्फ की बूंदों को देखती रहती थी।

एक दिन की बात है कि बाहर ज़ोरों की बर्फ गिर रही थी और रानी अपनी खिड़की में बैठी हुई सिलाई कर रही थी। खिड़की का फ्रेम सुन्दर काली आबनूस की लकड़ी का बना हुआ

था। चमकती हुई काली लकड़ी पर बर्फ की सफेद बूंदें फिसलती हुई बहुत अच्छी लग रही थीं। रानी का ध्यान सिलाई करने में नहीं था। वह बर्फ की बूंदों को देख रही थी। अचानक उसकी उंगली चूक गई और सुई उसकी उंगली में चुभ गई। सुई के चुभने से लाल खून की तीन बड़ी-बड़ी बूंदें खिड़की की बर्फ पर टपक पड़ीं। बर्फ की सफेद बूंदों में खून की लाल बूंदें बड़ी सुन्दर लग रही थीं। ऐसा लगता था जैसे हीरों के बीच तीन खूबसूरत लाल पड़े हैं।

रानी अपना दर्द भूल गई और मन में कहने लगी, 'आह, ये लाल बूंदें कितनी अच्छी लग रही हैं! मैं चाहती हूं कि मेरे एक बच्ची हो, जो बर्फ की तरह गोरी और सुन्दर हो, जिसके होंठ खून की तरह लाल हों और जिसके बाल आबनूस की लकड़ी की तरह काले हों!'

कुछ दिनों बाद रानी की इच्छा पूरी हुई। उसके यहां एक बच्ची ने जन्म लिया। बच्ची सचमुच बहुत सुन्दर थी। बर्फ की तरह गोरी। उसके होंठ खून की तरह लाल थे और बाल खूब काले थे। धीरे-धीरे बच्ची बड़ी होने लगी। रानी अपनी बच्ची को बहुत प्यार करती थी। उसने उसका नाम रखा—स्नोड्राप (बर्फ की बूंद)। लेकिन वह प्यार से उसको 'हेमा' कहकर बुलाती थी।

लेकिन हेमा अभी छोटी ही थी कि अचानक एक दिन मामूली-सी बीमारी में ही रानी की मृत्यु हो गई। हेमा इतनी छोटी थी कि उसकी समझ में कुछ नहीं आया, लेकिन कभी-कभी उसे अपनी मां की बहुत याद आती थी और वह रोने लगती थी। राजा को यह देखकर बड़ा दुःख होता था। अन्त में कुछ दिनों बाद उसने दूसरा विवाह कर लिया। इस तरह राजा की नई रानी और हेमा की नई मां आई।

नई रानी बहुत अधिक सुन्दर थी। उसके जैसी सुन्दर स्त्री सारे देश में कोई नहीं थी। रानी को अपनी सुन्दरता पर बड़ा घमण्ड भी था। वह स्वभाव की भी अच्छी नहीं थी। लोग कहते

थे कि वह जादूगरनी थी और उसे तरह-तरह के जादू-टोने मालूम थे। रानी के पास जादू का एक शीशा भी था। रानी इस शीशे को बहुत संभालकर रखती थी। इस शीशे में देखकर वह कई तरह की बातें जान लेती थी। वह रोज़ सुबह उठकर शीशे में देखती थी और शीशे से पूछती थी, "शीशे, शीशे, बता! इस देश में मुझसे ज़्यादा सुन्दर और कौन है?"

शीशा उसको जवाब देता, "नहीं रानी जी, नहीं, इस देश में तुमसे ज़्यादा सुन्दर और कोई नहीं है।"

रानी यह सुनकर बड़ी खुश होती थी। इस तरह मज़े में रानी के दिन कट रहे थे। शुरू-शुरू में तो रानी ने हेमा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। हेमा को भी कोई खास तकलीफ नहीं थी। नौकर-चाकर उसका काम कर देते थे। वह दिन-भर बाग में खेलती रहती थी। इस तरह हेमा भी बड़ी होने लगी।

एक दिन की बात है कि सुबह-सुबह जब रानी ने शीशे में अपना मुंह देखा और रोज़ की तरह उससे पूछा, "शीशे, शीशे, बता! इस देश में मुझसे ज़्यादा सुन्दर और कौन है?"

शीशे ने जवाब दिया, "हां, रानी जी, हां! हेमा तुमसे ज़्यादा सुन्दर है!"

यह सुनकर रानी के होश उड़ गए। पहले तो उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने डांटकर शीशे से फिर पूछा, लेकिन शीशे ने फिर वही जवाब दिया। अब तो रानी मारे क्रोध और ईर्ष्या से जलने लगी। वह पैर पटककर बोली, "ऐसा कैसे हो सकता है! इस देश में मुझसे बढ़कर सुन्दर और कोई कैसे हो सकता है? मैं हेमा को जल्दी ही यहां से दूर भगा दूंगी। दूर, बहुत दूर, जहां से वह फिर कभी लौटकर वापस न आ सके!"

रानी ने अपने एक नौकर को बुलाया। यह उसका बड़ा विश्वासपात्र नौकर था। रानी के हुक्म को वह जान पर खेलकर भी पूरा करता था। रानी भी उसे बहुत मानती थी। नौकर के आने पर रानी चुपके से उसको अपने कमरे में ले गई। वहां

जाकर रानी ने उससे कहा, "जाग्रो, इस लड़की को कहीं दूर जंगल में ले जाग्रो ग्रौर वहां छोड़ ग्राग्रो। इतनी दूर छोड़ना कि यह फिर कभी भी यहां वापस न लौट सके।" यह कहकर रानी ने ग्रपनी एक आंख दबाकर उसे इशारा किया ग्रौर उसके हाथ पर सोने की कुछ मोहरें रख दीं।

नौकर समझ गया कि रानी जी क्या चाहती हैं। रानी के इशारे का मतलब था कि हेमा को जंगल में ले जाकर मार डालो ताकि हमेशा के लिए इससे छुट्टी मिल जाए।

नौकर बहकाकर हेमा को जंगल में ले गया। लेकिन इतनी सुन्दर बच्ची की जान लेना उसके लिए मुश्किल काम था। उसने बहुत कोशिश की लेकिन वह उसको मार नहीं सका। उसने हेमा को सारी बात बता दी ग्रौर कहा, "जाग्रो, जंगल में भाग जाग्रो। फिर कभी लौटकर महल में मत आना। वरना, रानी तुमको ज़िंदा नहीं छोड़ेगी।"

हेमा को रोना ग्रा गया। लेकिन वह कर ही क्या सकती थी! नौकर उसको वहां छोड़कर वापस महल में लौट ग्राया। नौकर ने सोचा कि जंगल के जानवर हेमा को खा जाएंगे ग्रौर इस तरह उसका काम पूरा हो जाएगा। वापस घर ग्राकर रानी को नौकर ने बताया कि उसने हेमा को जंगल में ले जाकर मार डाला है। ग्रब वह फिर कभी लौटकर नहीं ग्राएगी। रानी बहुत खुश हुई। उसने नौकर को बहुत इनाम दिया।

उधर जंगल में हेमा इधर-उधर भटकने लगी। वह इतनी सुन्दर थी कि जंगल के किसी जानवर ने उसको कोई नुकसान नहीं पहुंचाया। शेर, चीता, भालू, भेड़िया, लोमड़ी वगैरा जो भी रास्ते में उसको मिलते थे, उसको देखकर रास्ता छोड़ देते थे या उसके साथ खेलने लगते थे। हेमा को भी इन जानवरों को देखकर कोई डर नहीं लगता था। वह इनको ग्रपना दोस्त समझती थी। बन्दर उसके लिए मीठे-मीठे फल तोड़कर ला देता था ग्रौर चिड़ियां उसे गाना सुनाती थीं! इसी तरह वह मज़े में जंगल में

घूमती रही। चलते-चलते शाम को वह एक पहाड़ी के किनारे पहुंची। वहां उसे एक छोटा-सा सुन्दर घर दिखाई दिया। वह घर के पास पहुंच गई और सीढ़ियों पर बैठकर आराम करने लगी।

सचमुच अब हेमा बहुत थक गई थी और अंधेरा भी बढ़ता जा रहा था। उसके मन में हुआ कि चलो देखें तो घर में कौन रहता है। वह सीढ़ी पर से उठी और उसने चुपके से जाकर उसका दरवाज़ा खोल लिया।

हेमा को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि घर में कोई नहीं था। वह डरते-डरते अन्दर चली गई। अन्दर एक बड़ा-सा कमरा था। कमरे में सब चीज़ें संभालकर रखी हुई थीं। कमरे की हर चीज़ बहुत छोटी-छोटी थी, जैसे वह किसी गुड़िया का घर हो।

कमरे के बीच में एक छोटी-सी टेबल रखी हुई थी और उसके आसपास सात छोटी-छोटी कुर्सियां रखी हुई थीं। टेबल पर छोटी-छोटी सात तश्तरियां, सात गिलास, सात प्याले और सात चम्मच सजाकर रखे हुए थे। हर गिलास में दूध भरा था और प्याले-तश्तरियों में खाने-पीने की चीज़ें रखी थीं। हेमा ने देखा कि एक कोने में कतार से सात छोटे-छोटे पलंग बिछे हुए हैं। उन सब पर छोटे-छोटे तकिये और कम्बल रखे हुए हैं। इस घर की हर चीज़ बहुत छोटी थी और गिनती में सात थी। ऐसा लगता था, जैसे यह सात गुड़ियों का घर है। हेमा को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन उसे किसी तरह का डर या घबराहट नहीं हुई। उसे लगा जैसे यह घर उसके लिए ही बनाया गया है।

हेमा ने तय किया कि वह अब इसी घर में रहेगी। वह पहले एक कुर्सी पर बैठी, फिर दूसरी पर बैठी, और बारी-बारी से सभी कुर्सियों पर बैठी। वह यह देखना चाहती थी कि कौन-सी कुर्सी सबसे ज़्यादा आरामदेह है। उसे भूख लगी थी। इसलिए पहले उसने एक तश्तरी में से एक बिस्कुट उठाकर थोड़ा-सा खाया। फिर दूसरी तश्तरी में से खाया। इस तरह हर तश्तरी में से उसने

थोड़ा-थोड़ा खाना खाया। इसके बाद सातों गिलासों में से उसने थोड़ा-थोड़ा दूध पिया। जब उसका पेट भर गया तो वह उठी और आराम करने के लिए पलंग के पास पहुंची। उसने एक-एक पलंग पर बैठकर देखा कि कौन-सा सबसे ज़्यादा अच्छा पलंग है। जो पलंग उमे सबसे ज़्यादा अच्छा लगा, उसी पर वह लेट गई और कम्बल ओढ़कर सो गई। थोड़ी ही देर में उसे गहरी नींद आ गई।

असल में यह घर सात बौनों का था। वे बौने मिल-जुलकर इस घर में रहते थे और पास ही पहाड़ पर सोने की खान में काम करते थे। शाम को सातों बौने घर लौटे। वे सभी थके हुए थे और जल्दी-जल्दी खा-पीकर सोना चाहते थे। अन्दर आकर उन्होंने दीया जलाया तो उन्हें पता चला कि किसीने उनके प्यालों और तश्तरियों को छेड़ा था।

एक बौना बोला, "ऐं, मेरी कुर्सी पर कौन बैठा था ?"

दूसरा बोला, "मेरा बिस्कुट किसने खाया ?"

तीसरा बोला, "मेरी रोटी किसने तोड़ी ?"

चौथा बोला, "देखा, किसी ने मेरा चम्मच जूठा कर दिया !"

पांचवा बोला, "लो, कोई मेरा मुरब्बा चाट गया !"

छठा बोला, "मेरी तश्तरी में चटनी थी, पता नहीं कौन मेरी चटनी चाट गया !"

सातवां मुंह सिकोड़कर बोला, "मेरे गिलास में दूध कम क्यों है ?"

सातों बौने आश्चर्य से एक-दूसरे की ओर देखने लगे। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। इस जंगल में आज तक कोई नहीं आया था और उनके घर में आने की तो कोई हिम्मत भी नहीं कर सकता था। अचानक बौनों की नजर अपने बिस्तरों की ओर गई। अब तो उनके अचरज की सीमा न रही। उन्होंने देखा एक पलंग पर एक बड़ी सुन्दर-सी लड़की सो रही है। उसके काले बाल तकिये पर फैले हुए थे और आंखें बन्द थीं। सातों बौने उसके

तकिये को घेरकर खड़े हो गए।

एक बौना बोला, "हाय, कितनी सुन्दर बच्ची है !"

दूसरा बोला, "इसके बाल कितने सुन्दर और काले हैं !"

"इसका रंग कितना गोरा है !" तीसरे ने कहा।

"और इसके होंठ तो देखो ! एकदम लाल सुर्ख हैं !" चौथा झुककर हेमा का मुंह देखता हुआ कह रहा था।

"ऐसी सुन्दर बच्ची तो मैंने आज तक नहीं देखी !" पांचवां बोला।

"बिलकुल नहीं ! गुड़िया है, गुड़िया !" छठे ने खुश होते हुए कहा।

"लेकिन यह यहां आई कैसे ?" सातवां अपने गाल पर हाथ रखकर कह रहा था।

उन्होंने तय किया कि इसको अभी ऐसे ही सोने दिया जाए। उन्होंने हेमा को और अच्छी तरह से कम्बल से लपेट दिया। अब वे बहुत धीरे-धीरे फुसफुसाते हुए बोल रहे थे। उन्हें डर था कि कहीं बच्ची की नींद न खुल जाए। चुपचाप खाना खाकर वे अपने-अपने बिस्तरों पर सो गए, लेकिन अब खाली बिस्तर छह ही बचे थे और उनकी संख्या सात थी। इसी तरह एक बौने को सोने के लिए बिस्तर नहीं मिला। लेकिन वह खुश था कि ऐसी सुन्दर परी जैसी बच्ची उसके पलंग पर सो रही थी। वह एक दूसरे बौने के साथ सो गया। एक घंटे-भर बाद वह तीसरे बौने के साथ सो गया। इसी तरह बारी-बारी से अपने एक-एक साथी के पास सोकर उसने रात काट दी।

सवेरा हुआ। हेमा ने भी अंगड़ाई लेकर अपनी आंखें खोल दीं। नींद में वह भूल चुकी थी कि वह अपने महल में नहीं बल्कि घने जंगल में थी। आंखें खोलने पर उसने सात बेहद नाटे और बूढ़े आदमियों को अपने बिस्तर के आसपास इकट्ठा देखा तो थोड़ी देर के लिए वह भौंचक्की रह गई। लेकिन उन लोगों को देखकर वह घबराई नहीं क्योंकि वे सभी मुस्करा रहे थे और बहुत

प्यार से उससे बोल रहे थे। पूछने पर हेमा ने अपनी कहानी उन्हें सुनाई। हेमा की कहानी सुनकर बौनों को बड़ा दुख हुआ।

उनमें जो सबसे ज़्यादा उम्र का बौना था, बोला, "हाय, वह रानी सचमुच में बड़ी दुष्ट है! ऐसी सुन्दर-सी बच्ची को मारना चाहिए? तुम अब कभी लौटकर उसके पास मत जाना।"

"हां, हां, अब तुम कभी यहां से मत जाना। हमारे साथ ही रहना। तुम मज़े से इसी घर में रहना और घर की देखभाल करना। क्यों ठीक है न?" दूसरे बौनों ने एक साथ कहा।

हेमा ने कहा, "हां, ठीक है, मैं यहीं रहूंगी और तुम्हारा काम कर दिया करूंगी।"

हेमा उठकर जल्दी-जल्दी तैयार हुई। फिर उसने सबके लिए नाश्ता बनाया। सब लोगों ने टेबल पर बैठकर एक साथ नाश्ता किया। इसके बाद वे लोग काम पर जाने की तैयारी करने लगे। जाने से पहले उन्होंने हेमा से कहा, "देखो, तुम ज़रा होशियारी से रहना और यहां से बाहर मत जाना। घर के सारे दरवाज़े और खिड़कियां बन्द करके बैठना। खिड़की में शीशा लगा हुआ है, उसीमें तुम बाहर के दृश्य देखती रहना।"

बड़े बोने ने कहा, "हां, घर से बिलकुल बाहर मत निकलना। वह दुष्ट रानी ज़रूर तुमको खोजने की कोशिश करेगी और अगर उसे मालूम हो गया कि तुम यहां हो तो वह तुम्हें यहां से पकड़ मंगवाएगी।"

हेमा राज़ी हो गई। उन लोगों के जाने के बाद उससे दरवाज़ा बन्द कर लिया और घर की सफाई वगैरा करने लगी। शाम को ठीक समय पर वे बौने काम से वापस लौटे। सब लोग इकट्ठे हुए तो इतने खुश थे कि कुछ मत पूछो। सबने जल्दी-जल्दी तैयार होकर खाना खाया और बैठकर बातें करने लगे। उन्होंने हेमा को अपने बीच में बिठा लिया और उसस हंसी-मज़ाक करने लगे। कोई ऊन लपेटने में हेमा की मदद करने लगा, तो कोई उसे सुन्दर-सुन्दर तस्वीरों वाली किताब दिखाने लगा।



सबसे छोटा बौना चित्रकार था। वह तुरन्त अपने रंगों के डिब्बे ले आया और फिर हेमा का चित्र बनाने लगा।

इसी तरह हंसने-खेलने के बाद सब लोग आराम से सो गए। दूसरे दिन फिर हेमा ने सबको खाना खिलाया और काम के लिए विदा किया। वह बड़ी खुश थी। बौनों के घर में उसे किसी तरह की तकलीफ नहीं थी। बातों ही बातों में दो दिन बीत गए।

उधर महल में रानी बड़ी खुश थी। अब उसे विश्वास हो गया था कि संसार में कोई भी स्त्री उसके जैसी सुन्दर नहीं है। खुशी-खुशी में उसने फिर शीशे से पूछ लिया, "शीशे, शीशे, बता! इस देश में मुझसे ज़्यादा सुन्दर और कौन है?"

इसपर शीशे ने जवाब दिया, "हां रानी जी, हां तुम सचमुच बहुत सुन्दर हो लेकिन तुम्हारा यह कहना गलत है कि तुम सबसे ज़्यादा सुन्दर हो। तुमसे ज़्यादा सुन्दर हेमा है और इस समय आराम से बौनों के घर में रह रही है।"

यह सुनकर रानी चीख उठी, "मुझको धोखा दिया गया है! नौकर ने मुझसे झूठ कहा। मैं उसको फांसी पर चढ़वा दूंगी। लेकिन इससे पहले मैं खुद हेमा का पता लगाऊंगी। वह मुझसे बचकर कहां जाएगी! मैं अपने हाथों गला दबाकर उसे मार डालूंगी।"

अब रानी ने खुद हेमा की खोज में जंगल जाने की तैयारी की। उसने अपने चेहरे पर रंग पोत लिया और एक बूढ़ी औरत का भेस बना लिया। फिर उसने एक टोकरी में रंग-बिरंगे रिबन और दूसरी अच्छी-अच्छी चीज़ें रखीं। इस तरह तैयार होकर वह जंगल की ओर रवाना हुई।

रानी जादूगरनी तो थी ही, वह सभी जंगली जानवरों की बोली भी जानती थी। यहां तक कि वह पेड़-पौधों, घास-फूस और फूल-पत्तों से भी बात कर सकती थी। जंगल में जाकर उसने फूलों से पूछा, तो उन्होंने कहा, "हां, हमने हेमा को इधर जाते देखा है।"

घास बोली, "हां, वह इधर से गई है। उसके नन्हे-नन्हे पैर मेरे ऊपर से होकर गुज़रे हैं।"

झाड़ियों ने बताया, "हेमा यहां से होकर उधर के रास्ते गई है। उसके कपड़े हमारे कांटों में अटक गए थे।"

फूलों ने रानी को बताया, "हेमा हमारे पास से होकर गुज़री थी। हमने उसको बहुत अच्छी-अच्छी कलियां भेंट में दीं थीं।"

पेड़ों ने बताया, "हां, बंदरों ने हमारे मीठे-मीठे फल तोड़कर हेमा को खिलाए थे।"

इस तरह रानी ने बड़ी आसानी से हेमा का पता लगा लिया। थोड़ी देर में वह सात बौनों के घर के पास जा पहुंची। उसने खिड़की में से झांककर देखा—अन्दर हेमा बैठी बौनों के फटे हुए मोज़े सी रही थी।

रानी ने बोली बदलकर आवाज़ लगाई, "आओ बेटी, आओ, अच्छे-अच्छे रिबन ले लो। मैं तुम्हारे लिए और भी कई चीज़ें लाई हूं। दरवाज़ा खोलो!"

हेमा यह सुनकर खिड़की के पास आ गई और बोली, "नहीं, मैं बाहर नहीं आ सकती। बौनों ने मुझको बाहर निकलने से मना किया है। लेकिन मैं तुम्हारी चीज़ें देखना चाहती हूं।"

रानी ने एक थकी हुई बुढ़िया की तरह हांफते हुए कहा, "तुम बाहर नहीं आ सकती तो फिर मुझे ही अन्दर आ जाने दो। तब मैं तुम्हें दिखाऊंगी कि मेरी टोकरी में क्या-क्या है।"

हेमा ने सोचा कि बुढ़िया को अन्दर आने देने में क्या हर्ज है। बौनों ने मुझको बाहर निकलने से मना किया है, लेकिन यह तो नहीं कहा है कि किसीको अन्दर न आने दूं। यह सोचकर उसने दरवाज़ा खोल दिया। बुढ़िया अन्दर आ गई।

हेमा ने जब उसकी टोकरी देखी तो उसमें उसे मोतियों की एक माला पसन्द आ गई। वह बोली, "मैं यह माला लेना चाहती हूं।"

बुढ़िया ने खुश होकर कहा, "हां, हां, क्यों नहीं, ले लो। तुम्हें जो भी पसन्द आए ले लो। लाओ, माला मैं तुम्हारे गले में बांध देती हूं।" यह कहकर वह हेमा के गले में माला बांधने लगी, लेकिन उसने माला को इतने ज़ोर से कसा की हेमा की सांस रुकने लगी। रानी ने और भी जोर से माला को कस दिया। हेमा का दम घुटने लगा और वह बेहोश होकर गिर पड़ी।

वह दुष्ट रानी खुशी से हंसकर बोली—"हा हा हा, चलो, झंझट खत्म हुआ! अब मेरा शीशा मुझे यह नहीं कह सकेगा कि मुझसे भी ज़्यादा सुन्दर कोई इस दुनिया में और है।" और वह हेमा को उसी तरह छोड़कर वापस अपने महल में चली आई।

शाम को बौने घर लौटे। उन्होंने जब हेमा को बेहोश ज़मीन पर पड़े हुए देखा तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने जल्दी-जल्दी माला काटकर फेंकी और हेमा को उठाकर बिस्तर पर लिटाया। हेमा की सांस अब भी चल रही थी। थोड़ी देर में उसने आंखें खोल दीं। फिर उसने उस बुढ़िया की बात बताई। बौनों ने कहा, "वह बुढ़िया और कोई नहीं, वही दुष्ट रानी थी। वह तुम्हारी जान लेने के लिए आई थी। तुम आगे से होशियार रहना और फिर कभी किसीको अन्दर मत आने देना।"

उधर घर पहुंचकर रानी ने मुंह-हाथ धोया और कपड़े बदले। फिर वह सीधी शीशे के पास पहुंची। उसने अपना वही सवाल दोहराया। लेकिन जब शीशे ने भी वही जवाब दिया तो मारे गुस्से के वह पागल हो गई। उसने कहा, "तो इसका मतलब यह है कि हेमा मरी नहीं। मुझे फिर से जंगल में जाना होगा और अबकी बार मैं ऐसा इन्तज़ाम करूंगी कि वह हमेशा के लिए मौत की नींद सो जाए।"

वह तुरन्त अपने कमरे में गई और वहां से एक कंघी निकाल लाई। यह कंघी इतनी ज़हरीली थी कि जो कोई बाल झाड़ता, वह उसी वक्त मर जाता। इस बार रानी ने दूसरा भेस बदला।

अपने जादू के बल पर वह सीधे बौनों के घर जा पहुंची।

बौने अभी थोड़ी ही देर पहले अपने काम पर घर से निकले थे। हेमा अकेली बैठी अनाज बीन रही थी। जब रानी ने उसको आवाज़ दी तो वह खिड़की में आ गई। हेमा नहीं पहचान सकी कि यह वही बुढ़िया है, जो कल उसको मारने के लिए आई थी। बुढ़िया ने कहा, "मेरे पास बहुत अच्छी-अच्छी कंघियां है। दर-वाज़ा खोलो तो तुम्हें एक अच्छी-सी कंघी दूं।"

पहले तो हेमा दरवाज़ा खोलने के लिए राज़ी नहीं हुई, लेकिन अन्त में वह भुलावे में आ गई और उसने दरवाज़ा खोल दिया। रानी बुढ़िया की तरह लंगड़ाती हुई अन्दर आ गई और प्यार से हेमा के सिर पर हाथ फेरने लगी और कहने लगी, "आह, तुम्हारे बाल कितने सुन्दर हैं! लाओ, मैं इनमें कंघी कर दूं।" जब उसने हेमा के बालों में कंघी करनी शुरू की तो हेमा को ज़हर चढ़ने लगा और थोड़ी ही देर में वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ी। रानी ने कंघी उसके बालों में ही फंसी रहने दी। फिर तुरन्त अपना सामान बटोरकर वहां से भाग खड़ी हुई।

शाम को जब बौने लौटकर आए तो उन्हें हेमा दरवाज़े के पास ही फर्श पर बेहोश पड़ी मिली। उन्होंने जल्दी से वह जादू की कंघी उसके बालों से निकालकर बाहर फेंकी और फिर उसे उठाकर बिस्तर पर लिटा दिया। भगवान की दया से आज भी वह मरी नहीं थी, लेकिन उसको होश में आने में बहुत देर लगी।

जब वह ठीक हो गई तो बौनों ने उससे कहा, "तुमने हमारा कहना क्यों नहीं माना? हमने तुमसे कहा था कि वह दुष्ट रानी तुम्हारे पीछे पड़ी हुई है और तुम्हारी जान लिए बिना चैन से नहीं बैठेगी। अब तुम कल न तो घर से बाहर निकलना न किसी-को अन्दर आने देना।"

उधर महल में पहुंचते ही रानी फिर शीशे के सामने जा पहुंची और उसने अपना सवाल दोहरा दिया। शीशे ने जवाब दिया कि हेमा उससे ज़्यादा सुन्दर है और अब भी ज़िंदा है। यह

सुनकर रानी चक्कर में पड़ गई। उसे हेमा पर बहुत गुस्सा आ रहा था। वह बैठकर नई चाल सोचने लगी।

फिर उसने अपने कमरे में जाकर एक ज़हरीला सेब तैयार किया। यह ताज़ा और गुलाबी सेब इतना खूबसूरत लग रहा था कि उसे देखकर कोई भी खाने के लिए मचल सकता था। रानी ने बड़ी मेहनत से उसपर इस तरह ज़हर लगाया कि उसका जो भाग सबसे सुन्दर था, वह ज़हरीला हो गया। उसको खाते ही कोई भी आदमी तुरन्त मर सकता था। लेकिन सेब का दूसरा भाग उसने बिलकुल साफ रखा।

दूसरे दिन रानी ने एक बूढ़ी कुंजड़िन का भेस बनाया और ठीक मौके पर बौनों के घर जा पहुंची।

इस बार जब उसने दरवाज़ा खटखटाया तो हेमा ने खिड़की में से उससे कहा, "तुम यहां से फौरन चली जाओ! मैं दरवाज़ा नहीं खोलूंगी। न मैं बाहर आऊंगी और न तुमको अन्दर आने दूंगी।"

इसपर उस दुष्ट रानी ने आवाज़ बदलकर कहा, "अरे, बेटी, ऐसी भी क्या बात है! भला मुझसे तुम क्यों डरती हो? मैंने तो सोचा कि चलो तुमको भी एक सेब देती जाऊं। तुम घर में अकेली बैठी होगी। तुम बाहर नहीं आ सकतीं और न मुझको अन्दर आने देना चाहती हो तो कोई बात नहीं। लो, यह बढ़िया-सा सेब ले लो। डरो मत, डरो मत! मैं खुद इसे खाकर तुम्हें दिखाती हूं।" यह कहकर उसने सेब को ठीक आधा काट दिया। उसने ज़हरीला टुकड़ा हेमा की ओर बढ़ा दिया और अपना टुकड़ा खाना शुरू कर दिया।

हेमा अब अपने को नहीं रोक सकी। उसने हाथ बढ़ाकर सेब ले लिया। लेकिन जैसे ही उसने थोड़ा-सा सेब खाया कि उसे चक्कर आ गया और वह वहीं गिर पड़ी। यह देखकर वह दुष्ट रानी खिलखिलाकर हंस पड़ी और बोली, "अब वे गंदे बौने तुम्हें नहीं बचा सकेंगे। अब तुम्हें कोई नहीं बचा सकेगा! मैं घर तक

पहुंचूंगी, इससे पहले ही तुम्हारी जान निकल जाएगी।"

फिर वह दौड़ती हुई महल में पहुंची और सीधे शीशे के सामने आ खड़ी हुई। उसने शीशे से फिर वही सवाल किया—"शीशे, शीशे, बता! इस देश में मुझसे ज़्यादा सुन्दर और कौन है?"

शीशे ने जवाब दिया, "नहीं, रानी जी, नहीं, इस देश में तुमसे ज़्यादा सुन्दर और कोई नहीं है!"

यह सुनकर रानी की खुशी की सीमा नहीं रही। उस रात वह चैन की नींद सोई। अब उसे विश्वास हो गया था कि हेमा मर चुकी है और उसे अब चिंता करने की ज़रूरत नहीं।

उधर जब शाम को बौने घर लौटे तो उन्होंने हेमा को फिर उसी तरह से ज़मीन पर गिरा हुआ पाया। जल्दी-जल्दी उन्होंने उसको उठाकर बिस्तर पर लिटाया। उन्होंने हेमा को होश में लाने की बड़ी कोशिश की लेकिन सब बेकार रहा। हेमा ने तो आंख तक नहीं खोली। वह मर चुकी थी।

बौनों को बड़ा दुःख हुआ। वे उसके पास बैठ गए और आंसू बहाने लगे। वे सात दिन तक इसी तरह बैठे रहे और आंसू ही आंसू बहाते रहे। मरने के बाद भी हेमा इतनी सुन्दर लग रही थी कि बौनों का मन नहीं हो रहा था कि उसके शरीर को ज़मीन में दफनाएं या जला दें।

अंत में उन्होंने शीशे का एक बड़ा-सा डिब्बा लिया और उसमें हेमा के शरीर को बन्द कर दिया। फिर उसके ऊपर उन्होंने सुनहरे अक्षरों में लिख दिया—'राजकुमारी हेमा'। इसके बाद उस डिब्बे को उठाकर वे पहाड़ के पास एक सुन्दर-से स्थान पर पहुंचे। वहां उन्होंने वह डिब्बा रख दिया। इसके बाद एक बौना बैठकर पहरा देने लगा। हेमा के मरने से जंगल के पेड़-पौधे और जीव-जन्तु, सभी बहुत दुःखी थे। पक्षी भी एक-एक करके दुःख मनाने के लिए वहां आए। पहले एक उल्लू आया, फिर एक कौवा और उसके बाद एक सफेद कबूतर!

कुछ समय बाद एक दिन एक राजकुमार उस जंगल में

शिकार खेलने के लिए आया। भटकते-भटकते वह उन बौनों के घर के पास आ निकला। जब उसे मालूम हुआ कि एक बौना पहाड़ के पास किसी शीशे के डिब्बे का पहरा दे रहा है तो वह वहां पहुंचा। पास जाने पर उसने हेमा को देखा तो देखता ही रह गया। उसने इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी। उसे हेमा से प्यार हो गया। उसने बौनों से कहा, "यह डिब्बा मुझे दे दो। मैं इसको अपने साथ ले जाऊंगा और महल में संभालकर रखूंगा। मैं अब इसके बिना जी नहीं सकता।"

बौनों को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने राजकुमार को बहुत समझाने की कोशिश की। उन्होंने कहा, "यह तो मर चुकी है। इसे हम एक-दो दिन में ही, जब हमारा दुःख कम हो जाएगा, यहां दफ़ना देंगे।"

लेकिन राजकुमार नहीं माना। उसने घर जाने से इन्कार कर दिया और वह भी बौनों के साथ वहां बैठकर दुःख मनाने लगा।

थोड़ी देर में राजकुमार के साथी वहां आ पहुंचे। जब उन्हें सारी बात मालूम हुई तो उन्होंने बौनों को समझाना शुरू किया। उन्होंने कहा, "हमारे राजा का यह एक ही लड़का है। अगर यह दुःख में पागल हो गया तो हमारे राजा को बहुत कष्ट होगा। तुम्हें इस राजकुमारी को दफनाना तो है ही। हम इसे ले जाते हैं। और राजमहल के बाग में इसे दफना देंगे और इसकी बहुत अच्छी समाधि बनवा देंगे।"

बहुत सोच-विचार के बाद बौने राज़ी हो गए। राजकुमार के साथ लोगों ने राजकुमारी का ताबूत उठाया और उसे ले जाने लगे तो अचानक एक आदमी का पैर फिसल गया और ताबूत ज़ोर से हिल उठा। उसके हिलते ही धक्के से हेमा के गले से सेब का वह ज़हरीला टुकड़ा उछलकर बाहर आ गया और देखते ही देखते हेमा फिर से जी उठी।

लोगों ने ताबूत उतारकर ज़मीन पर रख दिया और हेमा

ढक्कन खोलकर बाहर आ गई। उसने पूछा, "मैं कहां हूं, और तुम लोग कौन हो?"

राजकुमार ने आगे बढ़कर कहा, "तुम मेरे साथ हो। मैं तुमको बहुत अधिक चाहता हूं। तुम्हारे बिना अब मैं ज़िन्दा नहीं रह सकता। चलो, तुम मेरे साथ मेरे महल में चलो। तुमको देखकर मेरे पिताजी बहुत खुश होंगे। मुझे कुछ ही दिनों में राजगद्दी मिलने वाली है। मैं तुमको अपनी रानी बनाऊंगा।"

हेमा ने भी ऐसा सुन्दर राजकुमार पहले कभी नहीं देखा था। वह उसके साथ जाने के लिए राज़ी हो गई। अपने बौने दोस्तों से विदा लेकर वह राजकुमार के साथ चल पड़ी। राजकुमार हेमा को अपने महल में ले आया। जब राजा ने हेमा को देखा तो वह बहुत खुश हुआ और उसने उसे अपनी बहू बनाना स्वीकार कर लिया। जल्दी-जल्दी राजकुमार और हेमा की शादी की तैयारी होने लगी। आसपास के राजाओं के पास निमन्त्रण-पत्र भेजे गए।

उस दुष्ट रानी को भी इस विवाह में शामिल होने का निमन्त्रण मिला। वह सज-धजकर राजकुमार के विवाह में शामिल होने के लिए चल पड़ी, लेकिन चलने के पहले उसने अपने जादू के शीशे को देखा और पूछा, "शीशे, शीशे, बता, इस देश में मुझसे ज़्यादा सुन्दर और कौन है?"

शीशे ने जवाब दिया, "हां, रानीजी, हां, तुम बहुत सुन्दर हो, लेकिन तुमसे ज़्यादा सुन्दर वह राजकुमारी है, जिससे राजकुमार की शादी हो रही है।"

रानी यह सुनकर बड़ी दुःखी और निराशा हुई। साथ ही उसे गुस्सा भी बहुत आया, लेकिन वह कर ही क्या सकती थी। जिस राजकुमार की शादी हो रही थी, उसका राज्य बहुत बड़ा और शक्तिशाली था। अंत में वह मन मारकर वहां पहुंची। दूसरे राजा-रानियों के साथ उसको भी आदर के साथ महल में ठहराया गया।

शादी वाले दिन रानी दूसरे मेहमानों के साथ मंडप में पहुंची। वहां जब उसने राजकुमारी को देखा तो वह उसको देखते ही रह गई। उसने पहचान लिया कि वह हेमा ही थी और सज-धजकर दुलहिन बनी बैठी थी। वह इतनी सुन्दर लग रही थी कि बस कुछ मत पूछो।

रानी तुरन्त वहां से लौट आई। ईर्ष्या और क्रोध के मारे उसका बुरा हाल था। घर आकर वह अपने बिस्तर पर लेट गई और फूट-फूटकर रोने लगी। उसे इतना दुःख हुआ कि वह बीमार पड़ गई और कुछ ही दिनों में मर गई।

उधर हेमा राजकुमार के साथ सुख से रहने लगी। कुछ ही दिनों बाद राजकुमार धूम-धाम के साथ राजा बना। अब हेमा महारानी हेमा कहलाने लगी, लेकिन वह अपने बौने साथियों को भूली नहीं थी। उसने अपने महल में एक सुन्दर-सा कमरा उनके लिए बनवा रखा था। वहां उसने वैसी ही छोटी-छोटी सात कुर्सियां, मेज़ वगैरा लगवाई थीं और वैसे ही छोटे-छोटे सात पलंग बिछवाए थे। बौने जब कभी उससे मिलने आते थे तो उनको इसी कमरे में बड़े मान-सम्मान के साथ ठहराया जाता था। सब लोग जब मिलते थे तो बहुत खुश होते थे।

●●●

मुद्रक : शान प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली 28372

किशोरों के लिए साहित्य

ये पुस्तकें विश्वविख्यात उपन्यासों एवं कहानियों के किशोरोपयोगी संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर हैं। इनकी भाषा अत्यन्त सरल और शैली बड़ी रोचक है। बालक बड़े चाव से इन पुस्तकों को पढ़ेंगे।

गुलिवर की यात्राए (Gulliver's Travels)
राबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe)
खज़ाने की खोज में (Treasure Island)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी तावीज़ (Talisman)
तीसमार खां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
काला फूल (Black Tulip)
कैदी की करामात (The Count of Monte Cristo)
डेविड कापरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ की रानी (Andersen's Fairy Tales)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबीडिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimm's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा (20 Thousand Leagues Under the Sea)
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)
काला घोड़ा (Black Beauty)
साहसी राबिन्सन (Swiss Family Robinson)

शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६